गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 16
अंक : 008
दि. 08.05.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

सोमनाथ
अनंत ऊर्जा का अनुभव

सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।
लभते फलं मनोवाञ्छितं मृतः स्वर्गं समाश्रयेत्॥

सोमनाथ

विरासत के 75 साल

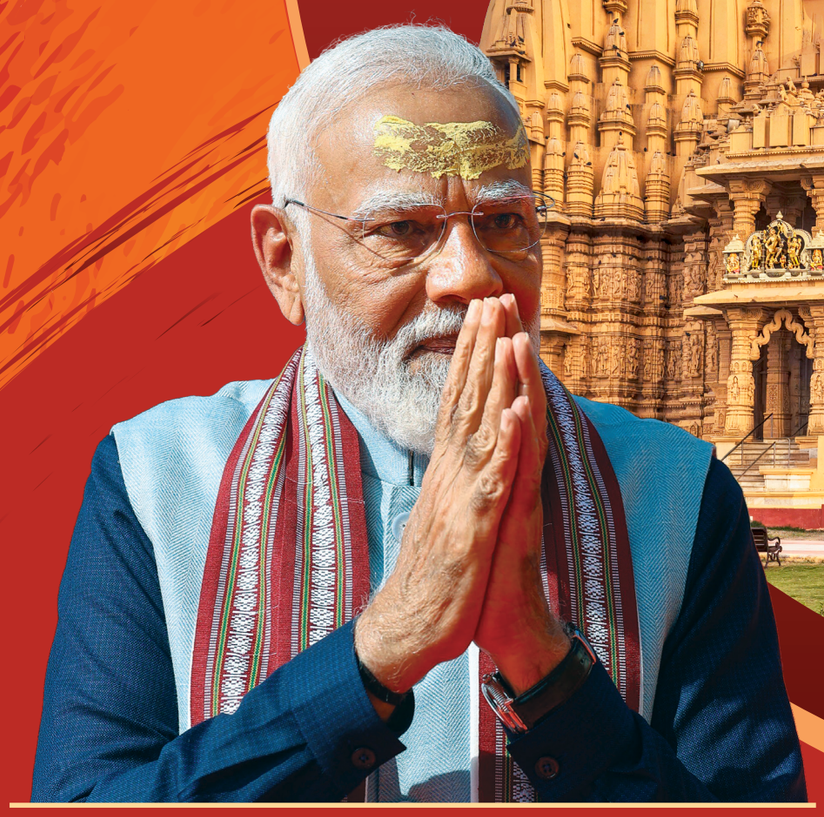

सोमनाथ भारत की अजेय सभ्यता का प्रतीक है।
1000 वर्षों के विनाशकारी प्रहारों के बाद भी, सोमनाथ आज हमारे आत्म-सम्मान और साहस की मिसाल बनकर खड़ा है।
75 वर्ष पहले लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प से आधुनिक सोमनाथ का मार्ग प्रशस्त हुआ।
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, आज यह पावन भूमि भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का उद्घोष कर रही है।

इस स्वर्णिम अवसर के साक्षी बनें

मुख्य गतिविधियां

कलश यात्रा | भजन संध्या | ॐकार मंत्र का जाप | सोमनाथ पुस्तिका में मंत्र लेखन
सोमनाथ से जुड़ी कथाओं का वाचन

“सोमनाथ आशा का वह गीत है जो हमें सिखाता है कि सृजन की शक्ति विनाश से कहीं अधिक प्रबल होती है।”
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी (अध्यक्ष, श्री सोमनाथ ट्रस्ट)

श्री सोमनाथ मंदिर परिसर, प्रभास पाटन | 8 से 11 मई, 2026

“सोमनाथ हमारी अजेय सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। आइए, इस दिव्य विरासत के 75 वर्ष पूरे होने के उत्सव में सहभागी बनें।”
- हर्ष संघवी, उपमुख्यमंत्री

सोमनाथ की दिव्यता व भव्यता में दें योगदान और बनें
गौरवशाली इतिहास का हिस्सा।
स्कैन करें।

संपादकीय

चेतावनी के धमाके

गाहे-बगाहे पंजाब में शांति भंग करने के अनेक कुत्सित प्रयास होते नजर आए हैं। सीमा पार से पंजाब का सुख-चैन छीनने के षड्यंत्र काले दौर से लेकर अब तक रुके नहीं हैं। नशे और बेरोजगारी को हथियार बनाकर भटके युवाओं को इन साजिशों का हथियार बनाने के मामले भी उजागर हुए हैं। पंजाब में हाल ही में दो धमाके हुए, पहला जालंधर में बीएसएफ चौकी के बाहर और दूसरा अमृतसर में सेना की छावनी के पास हुआ। सेना और सुरक्षा बलों को लक्षित इन हमलों के घातक मंसूबों को समझा जा सकता है। वहीं दूसरी ओर समय और लक्ष्य के लिहाज से इतने करीबी हमलों के निहितार्थ समझना कठिन नहीं है कि ये महज सामान्य मामले नहीं थे। अब भले ही इन धमाकों की तीव्रता कम रही हो,लेकिन इनमें गंभीर रणनीतिक चेतावनी छिपी है। वह ये कि भारतीय सुरक्षा व्यवस्था के संवेदनशील क्षेत्रों की हिफाजत को आंका जा रहा है। वहीं दूसरी ओर पंजाब के डीजीपी गौरव यादव द्वारा सैन्य क्षेत्र के पास हुए धमाकों में विस्फोटक उपकरण यानी आईडीपी के इस्तेमाल की पुष्टि करना, खतरे की गंभीरता को रेखांकित करता है। निस्संदेह, ये महज आकस्मिक घटनाएं मात्र नहीं हैं। ये सुनियोजित तरीके व जासूसी के जरिये रक्षा प्रतिष्ठानों के आसपास की कमजोर कड़ियों को तलाशने की कुत्सित कोशिश है। अब चाहे इन आतंकी गतिविधियों के तार स्थानीय साजिश से जुड़े हों या फिर सीमा पार से साजिश को अंजाम दिया गया हो, कह सकते हैं कि मिलाजुला षड्यंत्र हो, मगर तौर-तरीका स्पष्ट है। हालांकि, राजनीतिक दल अपनी राजनीतिक लाइन के अनुरूप बयान देने से बाज नहीं आ रहे हैं। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इसका दोष भाजपा पर मढ़ा है। वहीं भाजपा आप सरकार पर आरोप लगा रही है कि वह राज्य को सुरक्षा देने में विफल रही है। बहरहाल, भले ही आरोप-प्रत्यारोप का यह खेल नेताओं को राजनीतिक लाभ-हानि के गणित के अनुरूप लगता हो, मगर राज्य की सुरक्षा के नजरिये से अदूरदर्शी कदम ही कहा जाएगा। यह विडंबना ही है कि पंजाब के राजनेता अतीत के स्याह दौर की घातकता से कोई सबक नहीं सीखते हैं। राजनेताओं की संकीर्णता और दूरगामी प्रभावों को नजरअंदाज करके की गई बयानबाजी ही चिंगारी को आग बनाने का काम करती है। जिसकी कीमत दशकों तक पंजाब के लोगों व राज्य की अर्थव्यवस्था को चुकानी पड़ती है। यह सामान्य तथ्य है कि कि जब भी इस संवेदनशील व सीमावर्ती राज्य पर कोई सुरक्षा संकट पैदा हो, उसके लिये राजनीतिक भेदभाव भुलाकर समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है। टकराव की राजनीति से राज्य का अहित ही होगा। निस्संदेह, पंजाब का अतीत इस मामूली अशांति के प्रति भी विशेष रूप से संवेदनशील होने की जरूरत बताता है। दशकों तक पंजाब ने सुदृढ़ पुलिस व्यवस्था और खुफिया जानकारी पर आधारित अभियानों हेतु देशव्यापी ख्याति अर्जित की है। लेकिन हाल की घटनाओं ने हमारी सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाया ही है। यह गंभीर मसला है कि इस सीमावर्ती संवेदनशील राज्य में दस दिनों के भीतर तीन सुनियोजित व उच्च तकनीक से लैस विस्फोट हुए हैं। ये धमाके सभी पक्षों की मेहनत से अर्जित साख को धूमिल करने के जोखिम को बढ़ाते हैं। सवाल मात्र यही नहीं है कि इन धमाकों के लिये कौन जिम्मेदार है। प्रश्न यह भी है कि क्या इन धमाकों के बाबत खुफिया सूचनाओं को नजरअंदाज किया गया है? या फिर मिली हुई खुफिया सूचनाओं के आधार पर समन्वित प्रतिक्रिया देने में कहीं चूक हुई है? वास्तव में वक्त की सबसे बड़ी जरूरत इस बात को लेकर है कि हम ऐसी किसी भी चुनौती को लेकर एक समन्वित प्रतिक्रिया दें। केंद्र व राज्य सरकार की एजेंसियों के बीच खुफिया जानकारी का बेहतर ढंग से आदान-प्रदान किया जाए। वहीं दूसरी ओर सुरक्षा घेरे के दायरे का तत्काल प्रभाव से सुरक्षा ऑडिट किया जाए। इन साजिशों पर कड़ी निगरानी रखने की जरूरत है। खासकर लगातार गहरी होती ड्रोन आधारित घुसपैठ के खतरों को रोकने के लिये युद्धस्तर पर कार्रवाई की आवश्यकता है। ड्रोन आज अवैध हथियारों व नशीले पदार्थों की तस्करी का साधन बन रहे हैं। जनता का मनोबल बढ़ाना जरूरी है, लेकिन सुरक्षा जोखिमों को कम न आंका जाए।

पुराने दोस्त द्रमुक का हाथ दिया झटक, सत्ता के लिए पाला बदलने में कांग्रेस को कभी नहीं होती हिचक

> "कांग्रेस के इस फैसले ने द्रमुक को गहरा राजनीतिक झटका दिया है। द्रमुक नेताओं ने इसे ''पीठ में छूरा घोंपना'' बताया है। यह नाराजगी इसलिए भी अधिक है क्योंकि द्रमुक और कांग्रेस का रिश्ता केवल चुनावी समझौता नहीं बल्कि लंबे समय की राजनीतिक साझेदारी माना जाता रहा है।

तमिलनाडु की राजनीति में आज एक बड़ा और चौंकाने वाला मोड़ देखने को मिला, जब कांग्रेस ने विजय की तमिलगा वेत्री कड़गम यानि टीवीके को सरकार गठन के लिए समर्थन देने की घोषणा कर दी। इस फैसले के साथ ही द्रविड़ मुनेत्र कषगम यानि द्रमुक और कांग्रेस के बीच दो दशक से अधिक पुराने राजनीतिक रिश्ते पर लगभग विराम लग गया है। कांग्रेस ने साफ किया है कि उसका यह गठबंधन केवल सरकार गठन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि स्थानीय निकाय, लोकसभा और राज्यसभा चुनावों तक जारी रहेगा।हम आपको बता दें कि तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में विजय की पार्टी टीवीके 234 सदस्यीय सदन में 108 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। बहुमत के लिए 118 सीटों की जरूरत है। कांग्रेस के पांच विधायकों के समर्थन के बाद यह संख्या 113 तक पहुंच गई है और अब सरकार गठन के लिए केवल पांच और विधायकों की आवश्यकता रह गई है। विजय ने राज्यपाल राजेंद्र आर्लेकर से मुलाकात कर सरकार बनाने का दावा भी पेश कर दिया है। कांग्रेस ने अपने समर्थन के साथ एक महत्वपूर्ण शर्त भी रखी है। पार्टी ने कहा है कि टीवीके किसी भी परिस्थिति में भाजपा या उसके सहयोगी दलों को सरकार या गठबंधन का हिस्सा नहीं बनाएगी। तमिलनाडु प्रभारी गिरीश चोडानकर ने कहा कि कांग्रेस धर्मनिरपेक्ष, प्रगतिशील और संवैधानिक मूल्यों वाली राजनीति के साथ खड़ी है और जनता के जनादेश का सम्मान करना उसका कर्तव्य है।
उधर, कांग्रेस के इस फैसले ने द्रमुक को गहरा राजनीतिक झटका दिया है। द्रमुक नेताओं ने इसे ''पीठ में छूरा घोंपना'' बताया है। यह नाराजगी इसलिए भी अधिक है क्योंकि द्रमुक और कांग्रेस

का रिश्ता केवल चुनावी समझौता नहीं बल्कि लंबे समय की राजनीतिक साझेदारी माना जाता रहा है। दोनों दल पहली बार 1971 में साथ आए थे और बाद में 2004 से 2013 तक द्रमुक केंद्र में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार का अहम हिस्सा रही थी। 2016 के बाद दोनों ने फिर मिलकर चुनाव लड़े और राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा विरोधी राजनीति की मजबूत धुरी बने।
राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कांग्रेस का यह कदम केवल तमिलनाडु तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसका असर राष्ट्रीय राजनीति और विपक्षी गठबंधन इंडिया पर भी पड़ेगा। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब कांग्रेस और द्रमुक तमिलनाडु में आमने सामने होंगे, तब क्या वह राष्ट्रीय स्तर पर एक मंच पर बने रह पाएंगे। कांग्रेस यह तर्क दे रही है कि वाम दलों और तृणमूल कांग्रेस की तरह अलग अलग राज्यों में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद इंडिया गठबंधन जारी रह सकता है। लेकिन द्रमुक की नाराजगी और कांग्रेस के नए रुख ने विपक्षी एकता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।
इस घटनाक्रम का सबसे बड़ा राजनीतिक लाभ विजय और उनकी पार्टी टीवीके को मिलता दिखाई दे रहा है। पहली बार चुनाव लड़कर सबसे बड़ी पार्टी बनना और उसके तुरंत बाद कांग्रेस जैसे राष्ट्रीय दल का समर्थन हासिल करना विजय को राज्य की राजनीति में एक मजबूत विकल्प के रूप में स्थापित करता है। यही कारण है कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चेन्नई स्थित सत्यमूर्ति भवन में जश्न मनाया और इसे नई राजनीतिक शुरुआत बताया।
विजय ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी से बात कर उन्हें शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित भी किया है। इससे यह संकेत मिलता है कि दोनों दल भविष्य में स्थायी राजनीतिक साझेदारी की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। कांग्रेस नेता प्रवीण चक्रवर्ती ने बताया कि विजय ने राहुल गांधी और खरगे को फोन कर समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। हालांकि सरकार गठन का रास्ता अभी पूरी तरह साफ नहीं है। कांग्रेस के समर्थन के बाद भी टीवीके बहुमत से पांच सीट दूर है। ऐसे में नजर अब अन्नाद्रमुक पर टिकी है, जिसके पास 47 विधायक हैं। यदि अन्नाद्रमुक किसी रूप में समर्थन देती है, तो विजय आसानी से बहुमत हासिल कर सकते हैं। लेकिन यही वह स्थिति है जिसने कांग्रेस को असहज कर रखा है, क्योंकि उसने स्पष्ट कहा है कि भाजपा या उसके सहयोगियों की भागीदारी स्वीकार नहीं होगी। ऐसे में देखना होगा कि क्या अन्नाद्रमुक में विभाजन होता है या फिर अन्नाद्रमुक भाजपा का साथ छोड़कर विजय के साथ आ जाती है।
देखा जाये तो तमिलनाडु की राजनीति का इतिहास भी बताता है कि यहां गठबंधन स्थायी नहीं रहे हैं। कभी कांग्रेस और द्रमुक साथ रहे, फिर कांग्रेस अन्नाद्रमुक के साथ चली गई। 1999 में द्रमुक ने भाजपा के साथ हाथ मिलाया, जबकि 2004 में वह फिर कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन में लौट आई। इस बार भी सत्ता समीकरण ने पुराने रिश्तों को बदल दिया है। राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो कांग्रेस का यह फैसला व्यावहारिक राजनीति का उदाहरण माना जा रहा है। पार्टी को यह एहसास हो गया था कि द्रमुक के साथ रहते हुए उसकी भूमिका सीमित होती जा रही थी। वहीं टीवीके के साथ आने से उसे भविष्य में अधिक सीटें और सत्ता में भागीदारी मिलने की संभावना दिखाई दे रही है। दूसरी ओर द्रमुक के लिए यह संकट का समय है, क्योंकि उसका सबसे पुराना सहयोगी अब उसके विरोधी खेमे में खड़ा दिखाई दे रहा है।
आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि क्या इंडिया गठबंधन इस राजनीतिक झटके को संभाल पाता है या फिर राज्यों में बदलते समीकरण राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता को कमजोर कर देंगे। फिलहाल इतना तय है कि तमिलनाडु की राजनीति में विजय का उदय और कांग्रेस का नया दांव देश की राजनीति में एक नए दौर की शुरुआत का संकेत दे रहा है।

प्रेरणा

प्रकृति का मौन प्रतिशोध

अवंतिका नगर अपनी उपजाऊ भूमि और हरे-भरे खेतों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। वहां के किसान पूरे वर्ष मेहनत करते, मौसम की कठिनाइयों का सामना करते और बड़ी आशा के साथ फसल तैयार करते थे। लेकिन कई वर्षों से नगर के लोगों की एक समस्या लगातार बढ़ती जा रही थी। जैसे ही खेतों में फसल पकने लगती, बड़ी संख्या में पक्षी आकर दानों को चुग जाते। किसानों को लगता कि उनकी महीनों की मेहनत कुछ ही दिनों में नष्ट हो रही है। दिन-रात खेतों की रखवाली करनी पड़ती थी, फिर भी वे पक्षियों को पूरी तरह नहीं रोक पाते थे। धीरे-धीरे यह परेशानी इतनी बढ़ गई कि लोगों के मन में पक्षियों के प्रति घृणा पैदा हो गई।
एक दिन नगर के प्रमुख किसान और व्यापारी राजा के दरबार में पहुंचे। उन्होंने दुखी होकर अपनी समस्या सुनाई और कहा कि यदि पक्षियों से छुटकारा नहीं मिला, तो नगर में भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। किसानों की पीड़ा सुनकर राजा भी क्रोधित हो उठा। उसने बिना गहराई से विचार किए तुरंत आदेश दे दिया कि नगर के सभी पक्षियों को मार दिया जाए, ताकि किसानों की फसल सुरक्षित रह सके। सैनिकों ने राजा के आदेश का पालन किया और कुछ ही समय में पूरे नगर से पक्षियों का अस्तित्व समाप्त कर दिया गया।
शुरुआत में नगर के लोग बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें लगा कि अब उनकी सारी परेशानियां समाप्त हो गई हैं। खेतों में अब कोई चहचहाहट नहीं सुनाई देती थी और फसल को चुगने वाला कोई नहीं था। किसानों ने नए उत्साह के साथ बीज बोए। इस बार उन्हें पहरेदारी की भी आवश्यकता नहीं पड़ी। वे निश्चिंत होकर अपने घरों में रहने लगे और मन ही मन आने वाली भरपूर फसल के सपने देखने लगे।
समय बीतता गया। बारिश हुई, खेतों में हरियाली आई और पौधे बढ़ने लगे। लेकिन कुछ ही दिनों बाद किसानों ने देखा कि पौधे धीरे-धीरे कमजोर पड़ रहे हैं। कई स्थानों पर अंकुर निकलने से पहले ही बीज नष्ट हो गए। किसानों को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है। उन्होंने अधिक पानी दिया, खाद डाली और तरह-तरह के उपाय किए, लेकिन समस्या बढ़ती ही गई। जब फसल काटने का समय आया, तो पूरा नगर स्तब्ध रह गया। खेत लगभग खाली थे। जहां सुनहरी बालियां लहलहानी चाहिए थीं, वहां सूखी मिट्टी और बर्बाद पौधे दिखाई दे रहे थे।
स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि लोगों के पास अगले वर्ष बोने के लिए भी पर्याप्त बीज नहीं बचे। नगर में चिंता और निराशा फैल गई। जो लोग कुछ समय पहले पक्षियों के नष्ट होने पर खुशियां मना रहे थे, वही अब भय और पछतावे से भर गए थे। राजा भी यह देखकर चिंतित हो उठा। उसने विद्वानों और प्रकृति के जानकारों को बुलाकर इस विनाश का कारण जानने का आदेश दिया।
कई दिनों की खोज और निरीक्षण के बाद एक वृद्ध प्रकृतिविद ने राजा को सच्चाई बताई। उसने कहा कि खेतों की मिट्टी में रहने वाले कीड़े और छोटे जीव बीजों को खा रहे हैं। पहले पक्षी इन कीड़ों को खाकर उनकी संख्या नियंत्रित रखते थे। पक्षियों की उपस्थिति से खेतों का प्राकृतिक संतुलन बना रहता था। लेकिन जब सभी पक्षियों को समाप्त कर दिया गया, तो कीड़ों की संख्या तेजी से बढ़ गई। अब उन्हें खाने वाला कोई नहीं था, इसलिए उन्होंने बीजों और पौधों को नष्ट कर दिया। यही कारण था कि पूरी फसल बर्बाद हो गई।
राजा और नगरवासियों को अपनी गलती का गहरा अहसास हुआ। उन्होंने समझ लिया कि उन्होंने प्रकृति के नियमों को बिना समझे तोड़ने का प्रयास किया था। जिस जीव को वे अपना शत्रु समझ रहे थे, वही वास्तव में उनकी रक्षा कर रहा था। पक्षी केवल दाने ही नहीं खाते थे, बल्कि खेतों को हानिकारक कीड़ों से भी बचाते थे। प्रकृति में हर जीव का अपना एक विशेष कार्य और महत्व होता है। यदि किसी एक जीव को नष्ट कर दिया जाए, तो उसका प्रभाव पूरे जीवन चक्र पर पड़ता है।
इसके बाद राजा ने पूरे नगर में पक्षियों की रक्षा करने का आदेश दिया। लोगों ने अपने घरों और खेतों के आसपास पानी और दाने रखना शुरू किया। दूसरे राज्यों और जंगलों से पक्षियों को लाकर नगर में बसाया गया। धीरे-धीरे फिर से खेतों में चहचहाहट सुनाई देने लगी। पक्षियों ने लौटकर कीड़ों की संख्या कम की और कुछ वर्षों बाद फसलें फिर से लहलहाने लगीं। नगर में समृद्धि वापस आ गई, लेकिन इस घटना ने लोगों के मन में एक गहरी सीख छोड़ दी।
अवंतिका नगर के लोगों ने समझ लिया कि मनुष्य चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह प्रकृति से बड़ा नहीं हो सकता। प्रकृति का प्रत्येक जीव, चाहे वह छोटा कीड़ा हो, पक्षी हो या पशु, इस संसार के संतुलन को बनाए रखने में योगदान देता है। यदि मनुष्य केवल अपने स्वार्थ के लिए किसी जीव को समाप्त करने लगे, तो उसका दुष्परिणाम अंततः स्वयं मनुष्य को ही भुगतना पड़ता है।
आज भी जब अवंतिका नगर के बुजुर्ग अपने बच्चों को यह कहानी सुनाते हैं, तो वे उन्हें यही समझाते हैं कि प्रकृति केवल पेड़-पौधों और जानवरों का समूह नहीं है, बल्कि एक ऐसा जटिल तंत्र है जिसमें हर जीव एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। जैसे शरीर के सभी अंग मिलकर जीवन को चलाते हैं, वैसे ही प्रकृति के सभी जीव मिलकर धरती पर जीवन का संतुलन बनाए रखते हैं। यदि एक कड़ी टूटती है, तो पूरा तंत्र प्रभावित होता है।
यह घटना केवल एक नगर की कहानी नहीं, बल्कि पूरे मानव समाज के लिए एक चेतावनी है। आज मनुष्य अपने विकास और सुविधाओं के लिए जंगल काट रहा है, नदियों को प्रदूषित कर रहा है और अनेक जीवों को विलुप्त होने की कगार पर पहुंचा रहा है। लेकिन वह भूल जाता है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का परिणाम अंततः विनाश ही होता है। पर्यावरण संरक्षण केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की आवश्यकता है। प्रकृति हमें निस्वार्थ भाव से जीवन देती है। वह हवा, पानी, भोजन और आश्रय प्रदान करती है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम हर जीव का सम्मान करें, पर्यावरण की रक्षा करें और प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में अपना योगदान दें। क्योंकि जब प्रकृति संतुलित रहती है, तभी जीवन सुरक्षित और समृद्ध बनता है।

तेजाब और पितृसत्ता के बीच संघर्ष करती स्त्री

हाल ही में देश के शीर्ष न्यायालय ने 'शाहीन मलिक बनाम भारत संघ' मामले में एसिड अटैक के संबंध में मौजूदा कानूनों के तहत तेजाब हमलों से जुड़े मामलों के निस्तारण को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की। अदालत ने माना कि ऐसे अपराधों के लिए निर्धारित दंड पर्याप्त नहीं हैं तथा कई पीड़ित अब भी उचित कानूनी पहचान और सहायता से वंचित हैं। सुनवाई के दौरान न्यायालय ने विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 के प्रावधानों की भी समीक्षा की। अदालत ने पाया कि अधिनियम की वर्तमान अनुसूची में तेजाब हमले के पीड़ितों को केवल उन व्यक्तियों तक सीमित रखा गया है जो 'एसिड या इसी तरह के संहारक पदार्थ फेंकने से हुए हिंसक हमलों के कारण विकृत हो गए हैं।' न्यायालय ने केंद्र सरकार से अनुसूची में संशोधन कर ऐसे मामलों को शामिल करने पर विचार करने को कहा।
सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा, 'यदि इस संशोधन को अधिसूचित किया जाता है तो हम इसकी सराहना करेंगे।' यही नहीं पीठ ने तेजाब की सहज उपलब्धता और उसकी अवैध बिक्री पर भी गंभीर चिंता जताई और कहा कि अवैध रूप से तेजाब बेचने वाले विक्रेताओं को जिम्मेदारी से बचने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए तथा ऐसे मामलों में उनकी जवाबदेही भी सुनिश्चित होनी चाहिए।
न्यायालय ने यह भी संकेत दिया कि दायित्व केवल हमलावर तक सीमित नहीं रहना चाहिए। सुनवाई के दौरान अपराधियों पर कठोर आर्थिक दंड लगाने और उनकी संपत्ति जब्त करने जैसे उपायों पर भी चर्चा हुई। अदालत ने टिप्पणी की, 'हमलावर की संपत्ति, जिसमें संयुक्त हिंदू परिवार की संपत्ति में उसका हिस्सा भी शामिल है, क्यों न जब्त की जाए? हम आत्मसम्मान आदि की बात करते हैं... तो आरोपी को क्यों नहीं भुगतना चाहिए?'
एसिड अटैक मानवता के मुंह पर वह तमाचा है, जहां सभ्यता, संस्कृति और संवेदनाएं एक साथ दम तोड़ती दिखाई देती हैं। ऐसे अपराध केवल किसी एक व्यक्ति पर हमला नहीं होते, बल्कि वे पूरे समाज की चेतना और नैतिकता को कठघरे में खड़ा कर देते हैं। विशेष रूप से वे लोग भी प्रश्नों के घेरे में आ जाते हैं, जो इस हिंसा के विरुद्ध बोलने का साहस नहीं जुटा पाते। बिना किसी अपराध के जीवनभर असहनीय पीड़ा सहना केवल शारीरिक या मानसिक यातना भर नहीं है। यह उस धीमे ज़हर की तरह है, जिसमें पीड़िता हर दिन जीते हुए स्वयं को अपराधबोध, उपेक्षा और सामाजिक असहजता के बीच घिरा हुआ पाती है। विडंबना यह है कि तेजाब का प्रभाव केवल शरीर को नहीं जलाता, बल्कि वह व्यक्ति के आत्मविश्वास, संबंधों और जीवन के प्रति विश्वास को भी भीतर तक झुलसा देता है। यदि हम यह सोचते हैं कि ऐसी कुंठित मानसिकता केवल भारत तक सीमित है, तो यह हमारी गंभीर भूल होगी। स्त्री को अस्वीकार किए जाने, नियंत्रण खो देने या आहत अहंकार के प्रतिशोध में हिंसा का शिकार बनाना दरअसल संपूर्ण विश्व की एक सामाजिक बीमारी है। पुरुष अक्सर स्त्री की 'न' को स्वीकार नहीं कर पाता। जब उसका अहंकार घायल होता है, तब वह शक्ति, भय, हिंसा या नियंत्रण के माध्यम से स्त्री पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। और जब वह ऐसा करने में असफल होता है, तब कई बार प्रतिशोध सबसे क्रूर रूप में सामने आता है।
नारीवादी चिंतक बेल हुक्स पितृसत्ता को ऐसी व्यवस्था मानती हैं, जो पुरुष को यह विश्वास दिलाती है कि प्रभुत्व उसका स्वाभाविक अधिकार है। वहीं मनोवैज्ञानिक लंडी बैनक्रॉफ्ट अपनी पुस्तक 'व्हाय डज़ ही डू दैट?' में लिखते हैं कि हिंसा केवल क्षणिक क्रोध का परिणाम नहीं होती, बल्कि उसके मूल में स्वामित्व, अधिकारबोध और नियंत्रण की मानसिकता छिपी होती है। यही कारण है कि जब कोई स्त्री अपनी स्वतंत्र इच्छा से निर्णय लेती है, असहमति जताती है या किसी संबंध को अस्वीकार करती है, तब पुरुषवादी अहंकार कई बार उसे दंडित करने पर उतारू हो जाता है।
इन तमाम असहनीय यातनाओं और सामाजिक उपेक्षाओं के बीच जो बात सबसे अधिक चकित करती है, वह है एसिड अटैक सर्वाइवर्स की अदम्य जिजीविषा। उनकी जिजीविषा पितृसत्तात्मक मानसिकता को आईना दिखाती है। जिन लोगों ने उन्हें तोड़ने, डराने और जीवनभर के लिए समाप्त कर देने का प्रयास किया, वे उनके शरीर को तो घायल कर पाए, पर उनकी आत्मा, उनका साहस और जीने की इच्छा को समाप्त नहीं कर सके। शायद यही उन अपराधियों की सबसे बड़ी हार है कि जिन स्त्रियों को वे भय और पीड़ा के अंधेरे में धकेल देना चाहते थे, वही स्त्रियां आज संघर्ष, आत्मसम्मान और साहस की सबसे मजबूत आवाज बनकर खड़ी हैं।
भारतीय एसिड अटैक सर्वाइवर रेशमा कुरैशी इसका एक सशक्त उदाहरण हैं। जिस लड़की के चेहरे को तेजाब से मिटा देने की कोशिश की गई थी, वही रेशमा बाद में न्यूयॉर्क फैशन वीक के रैंप तक पहुंचीं। यह केवल एक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि उस मानसिकता के विरुद्ध एक शांत किंतु दृढ़ प्रतिरोध था, जो किसी स्त्री की पहचान को उसके चेहरे तक सीमित समझती है। कुछ ऐसी ही कहानी ब्रिटेन की केटी पाइपर की भी है। एक भयावह एसिड अटैक के बाद लंबे समय तक शारीरिक और मानसिक पीड़ा से गुजरने वाली केटी ने स्वयं को केवल एक पीड़िता के रूप में सीमित नहीं होने दिया। अनेक सर्जरी, सामाजिक भय और आत्मसंघर्ष के बाद उन्होंने अपने अनुभवों को लेखन और सामाजिक जागरूकता का माध्यम बनाया। उनकी पुस्तक 'ब्यूटीफुल' केवल एक आत्मकथा नहीं, बल्कि उस स्त्री की आंतरिक यात्रा है, जिसने अपने टूटे हुए अस्तित्व को धीरे-धीरे फिर से गढ़ा।
दरअसल, रेशमा कुरैशी, लक्ष्मी अग्रवाल और केटी पाइपर जैसी महिलाएं अकेली नहीं हैं। ईरान की अमेनेह बहरामी, कोलंबिया की नतालिया पोंसे दे लियोन, पाकिस्तान की फाखरा यूनुस और बांग्लादेश की जहरा जैसी अनेक महिलाओं ने एसिड अटैक की भयावह पीड़ा झेलने के बावजूद स्वयं को चुप्पी में कैद नहीं होने दिया। इन महिलाओं ने अपने संघर्ष को निजी दुख तक सीमित रखने के बजाय उसे सामाजिक प्रतिरोध और जागरूकता की आवाज में बदल दिया। भारत में भी एसिड अटैक सर्वाइवर्स ने अपने संघर्ष को मौन पीड़ा में बदलने से इंकार किया। आगरा, लखनऊ और नोएडा में संचालित 'शीरोज़ हैंगआउट' केवल एक कैफे नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और पुनर्निर्माण का जीवित प्रतीक है।

अभियान

जहां समुद्र की लहरों के बीच विराजते हैं महादेव, रावण और आत्मलिंग की कथा से जुड़ा है यह रहस्यमयी धाम

भारत को यदि आस्था और अध्यात्म की भूमि कहा जाए, तो यह बिल्कुल भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां का प्रत्येक प्रदेश अपने भीतर हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति, इतिहास और धार्मिक मान्यताओं को समेटे हुए है। देश के अलग-अलग हिस्सों में स्थित मंदिर केवल पूजा के स्थान नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय सभ्यता की जीवंत पहचान भी हैं। कुछ मंदिर अपनी भव्य वास्तुकला के कारण प्रसिद्ध हैं, तो कुछ अपने चमत्कारों और पौराणिक कथाओं के कारण। दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित मुरुदेश्वर मंदिर भी ऐसा ही एक अद्भुत और रहस्यमयी शिवधाम है, जिसका संबंध सीधे रामायण काल और रावण की कथा से जोड़ा जाता है। समुद्र के किनारे स्थित यह मंदिर अपनी दिव्यता, विशाल शिव प्रतिमा और आध्यात्मिक वातावरण के कारण दुनिया भर के श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है।
कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले की भटकल तहसील में स्थित मुरुदेश्वर मंदिर अरब सागर के किनारे बना हुआ है। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक आस्था का अनोखा संगम प्रस्तुत करता है। मंदिर के चारों ओर फैला नीला समुद्र, दूर तक दिखाई देने वाली लहरें और बीच में खड़ी भगवान शिव की विशाल प्रतिमा किसी स्वर्गिक दृश्य से कम नहीं लगती। यहां पहुंचते ही श्रद्धालुओं को ऐसा महसूस होता है जैसे वे किसी अलग ही आध्यात्मिक संसार में प्रवेश कर चुके हों। समुद्र की ठंडी हवाएं और मंदिर की घंटियों की ध्वनि मन को शांति और सुकून से भर देती है। मुरुदेश्वर मंदिर का इतिहास बेहद प्राचीन माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इसका संबंध त्रेता युग और लंका के राजा रावण से है। रावण भगवान शिव का परम भक्त था। उसने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की थी। वर्षों तक कठिन साधना करने के बाद जब भगवान शिव उसकी भक्ति से प्रसन्न हुए, तब उन्होंने उसे आत्मलिंग प्रदान किया। यह आत्मलिंग अत्यंत शक्तिशाली और दिव्य माना जाता था। कहा जाता है कि यदि यह आत्मलिंग लंका में स्थापित हो जाता, तो रावण अजेय और अमर हो जाता।
भगवान शिव ने रावण को आत्मलिंग देते समय एक शर्त रखी थी। उन्होंने कहा था कि यात्रा के दौरान यदि आत्मलिंग को कहीं भी जमीन पर रख दिया गया, तो वह वहीं स्थायी रूप से स्थापित हो जाएगा और फिर उसे कोई हिला नहीं सकेगा। रावण आत्मलिंग को लेकर लंका की ओर रवाना हो गया। देवताओं को जब यह ज्ञात हुआ कि यदि आत्मलिंग लंका पहुंच गया, तो रावण को अपार शक्ति मिल जाएगी, तब वे चिंतित हो उठे। सभी देवताओं ने भगवान गणेश से सहायता मांगी। भगवान गणेश ने एक छोटे बालक का रूप धारण किया और गोकर्ण के पास रावण के सामने प्रकट हुए। उसी समय रावण को संध्या वंदन और पूजा करनी थी। उसने उस बालक से कुछ देर के लिए आत्मलिंग पकड़ने का अनुरोध किया। बालक बने गणेश जी ने कहा कि यदि वह अधिक देर तक नहीं लौटे, तो वह आत्मलिंग को जमीन पर रख देंगे। रावण पूजा में व्यस्त हो गया और कुछ समय बाद गणेश जी ने आत्मलिंग को धरती पर रख दिया। जब रावण वापस लौटा, तो उसने आत्मलिंग को उठाने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन वह उसे हिला नहीं सका। कहा जाता है कि क्रोध में आकर रावण ने आत्मलिंग को उखाड़ने और नष्ट करने का प्रयास किया। इस दौरान आत्मलिंग से जुड़े कुछ हिस्से अलग-अलग स्थानों पर जाकर गिरे। जिस वस्त्र में आत्मलिंग को लपेटा गया था, वह कंदुका पर्वत पर आकर गिरा। यही स्थान बाद में मुरुदेश्वर कहलाया। शिव पुराण में इस कथा का उल्लेख मिलता है और इसी कारण मुरुदेश्वर मंदिर को रामायण काल की घटनाओं से जुड़ा हुआ माना जाता है। आज भी यहां आने वाले श्रद्धालु इस कथा को श्रद्धा और विश्वास के साथ सुनते हैं। मुरुदेश्वर मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यहां स्थापित भगवान शिव की विशाल प्रतिमा है। लगभग 123 फीट ऊंची यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची शिव प्रतिमाओं में से एक मानी जाती है। समुद्र के किनारे स्थित यह प्रतिमा दूर से ही दिखाई देने लगती है। ऐसा लगता है मानो स्वयं भगवान शिव समुद्र के बीच विराजमान होकर अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रहे हों। इस प्रतिमा को इतनी अद्भुत शैली में बनाया गया है कि दिनभर सूर्य की किरणें इस पर पड़ती रहती हैं। प्रतिमा का रंग चांदी जैसा रखा गया है, जिससे सूर्य का प्रकाश पड़ते ही यह और अधिक तेजस्वी और भव्य दिखाई देती है।
सुबह के समय जब सूर्य की पहली किरण भगवान शिव की प्रतिमा पर पड़ती है, तब उसका दृश्य अत्यंत अलौकिक प्रतीत होता है। शाम के समय समुद्र में डूबते सूरज के साथ यह प्रतिमा और भी मनमोहक दिखाई देती है। यहां आने वाले पर्यटक इस अद्भुत दृश्य को कैमरे में कैद करने से खुद को रोक नहीं पाते। रात के समय जब मंदिर और प्रतिमा रोशनी से जगमगा उठते हैं, तब पूरा क्षेत्र किसी दिव्य लोक जैसा दिखाई देता है। मंदिर की वास्तुकला भी बेहद आकर्षक है। दक्षिण भारतीय शैली में बने इस मंदिर का गोपुरम बहुत ऊंचा और भव्य है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर की गई नक्काशी और कलात्मक डिजाइन श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है। मंदिर परिसर में भगवान शिव के अलावा कई अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी स्थापित हैं। यहां आने वाले श्रद्धालु विशेष रूप से आत्मलिंग के दर्शन करने के लिए पहुंचते हैं। माना जाता है कि सच्चे मन से पूजा करने पर भगवान शिव भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।
मुरुदेश्वर मंदिर केवल धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि पर्यटन का भी प्रमुख केंद्र बन चुका है। देश के विभिन्न राज्यों के अलावा विदेशों से भी बड़ी संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं। समुद्र के किनारे स्थित होने के कारण यहां का वातावरण हमेशा शांत और आनंददायक रहता है। लोग यहां समुद्र तट पर बैठकर ध्यान और साधना भी करते हैं। मंदिर के आसपास का क्षेत्र साफ-सुथरा और व्यवस्थित है, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती। इस विशाल शिव प्रतिमा का निर्माण प्रसिद्ध मूर्तिकार शिवमोग्गा काशीनाथ और उनकी टीम द्वारा किया गया था। इसे बनाने में लगभग पांच वर्ष का समय लगा और करीब पांच करोड़ रुपये की लागत आई थी। उस समय इतनी विशाल प्रतिमा का निर्माण एक बड़ी उपलब्धि माना गया था। आज यह प्रतिमा भारतीय कला और स्थापत्य कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण बन चुकी है। मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए आधुनिक सुविधाओं की भी व्यवस्था की गई है। यहां लिफ्ट की सुविधा उपलब्ध है, जिसकी सहायता से लोग ऊपर जाकर समुद्र और आसपास के सुंदर दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। ऊपर से देखने पर अरब सागर का दृश्य अत्यंत मनोहारी दिखाई देता है। दूर तक फैला नीला पानी और उसके बीच स्थित मंदिर का दृश्य हर किसी के मन को मोह लेता है।
मुरुदेश्वर मंदिर के आसपास कई छोटे-बड़े बाजार भी मौजूद हैं, जहां धार्मिक वस्तुएं, प्रसाद, शंख, सीपियां और स्थानीय हस्तशिल्प की चीजें मिलती हैं। यहां आने वाले लोग दक्षिण भारतीय व्यंजनों का स्वाद लेना भी नहीं भूलते। मंदिर के पास स्थित भोजनालयों में पारंपरिक दक्षिण भारतीय भोजन श्रद्धालुओं को विशेष रूप से आकर्षित करता है। महाशिवरात्रि और श्रावण मास के दौरान यहां विशेष उत्सव आयोजित किए जाते हैं। इन अवसरों पर लाखों श्रद्धालु भगवान शिव के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। मंदिर को रंग-बिरंगी रोशनी और फूलों से सजाया जाता है। भक्त घंटों तक कतार में खड़े होकर महादेव के दर्शन करते हैं। पूरे क्षेत्र में "हर-हर महादेव" और "ॐ नमः शिवाय" के जयकारे गूंजते रहते हैं। उस समय यहां का वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो जाता है। मुरुदेश्वर मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और पुराणों की जीवंत धरोहर भी है। यह स्थान हमें हमारी प्राचीन परंपराओं और धार्मिक इतिहास से जोड़ता है। यहां आने वाला हर व्यक्ति यह महसूस करता है कि आस्था और भक्ति की शक्ति समय के साथ कभी समाप्त नहीं होती। समुद्र की लहरों के बीच अडिग खड़ी भगवान शिव की यह प्रतिमा आज भी श्रद्धालुओं को यह संदेश देती है कि सच्ची भक्ति में अपार शक्ति होती है और भगवान अपने भक्तों की हर

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

पश्चिम बंगाल की राजनीति में बड़ा सियासी भूचाल, टीएमसी में अंदरूनी कलह की अटकलें तेज; बैठक से 10 विधायक अनुपस्थित

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति एक बार फिर उथल-पुथल के दौर में प्रवेश करती दिख रही है। हाल ही में आए चुनावी नतीजों के बाद राज्य में राजनीतिक समीकरण तेजी से बदलते नजर आ रहे हैं। इसी बीच तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) में अंदरूनी असंतोष और संभावित फूट की चर्चाएं तेज हो गई हैं, जब पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी द्वारा बुलाई गई एक महत्वपूर्ण रणनीतिक बैठक में 10 विधायक अनुपस्थित पाए गए।

सूत्रों के अनुसार, यह बैठक कोलकाता स्थित ममता बनर्जी के आवास पर आयोजित की गई थी, जिसमें पार्टी के नवनिर्वाचित विधायकों को भविष्य की रणनीति और संगठनात्मक स्थिति पर चर्चा के लिए बुलाया गया था। कुल 80 विधायकों में से केवल 70 विधायक ही बैठक में उपस्थित रहे, जबकि 10 विधायकों की अनुपस्थिति ने राजनीतिक हलकों में कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

हालांकि पार्टी की ओर से इस पर तुरंत सफाई देते हुए कहा गया कि अनुपस्थित सभी विधायकों ने पहले ही अपनी अनुपस्थिति की सूचना दे दी थी। टीएमसी के बयान के अनुसार, कुछ विधायकों को विशेष परिस्थितियों के कारण बैठक में शामिल न होने के निर्देश दिए गए थे, जबकि कुछ को पारिवारिक और स्वास्थ्य संबंधी कारणों से छूट दी गई थी। पार्टी ने यह भी स्पष्ट किया कि कुछ विधायकों की अनुपस्थिति को लेकर मीडिया में जो अटकलें लगाई जा रही हैं, वे तथ्यों पर आधारित नहीं हैं।

इसके बावजूद राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इतनी बड़ी संख्या में विधायकों की अनुपस्थिति को पूरी तरह सामान्य मानना मुश्किल है। इस घटना ने राज्य की राजनीति में टीएमसी के भीतर संभावित असंतोष और नेतृत्व को लेकर

चल रही अंदरूनी चर्चाओं को और हवा दे दी है।

यह बैठक विशेष रूप से उस समय महत्वपूर्ण हो जाती है जब राज्य में चुनावी परिणामों के बाद राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। हाल के चुनावों में भाजपा की बढ़त और टीएमसी की स्थिति में आई कमजोरी ने पार्टी के भीतर आत्ममंथन की स्थिति पैदा कर दी है। इसी संदर्भ में यह बैठक पार्टी के भविष्य की दिशा तय करने के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही थी।

बैठक में पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी के साथ-साथ महासचिव अभिषेक बनर्जी भी मौजूद रहे। चर्चा का मुख्य फोकस चुनावी परिणामों की समीक्षा, संगठनात्मक कमजोरियों की पहचान और आगामी राजनीतिक रणनीति पर रहा। पार्टी प्रवक्ता कुणाल घोष ने बैठक के बाद बयान देते हुए कहा कि सभी महत्वपूर्ण निर्णय ममता बनर्जी के नेतृत्व में ही लिए जाएंगे और पार्टी पूरी तरह एकजुट है।

हालांकि जमीनी स्तर पर पार्टी के भीतर असंतोष की आवाजें भी धीरे-धीरे सामने आने लगी हैं। कुछ नेताओं ने चुनावी हार के कारणों पर खुलकर सवाल उठाने शुरू कर दिए हैं। पूर्व मंत्री और कुछ वरिष्ठ नेताओं ने संगठनात्मक प्रबंधन और विकास कार्यों में देरी को लेकर भी नाराजगी जताई है। वहीं कुछ नेताओं ने अप्रत्यक्ष रूप से पार्टी नेतृत्व की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए इसे हार का एक प्रमुख कारण बताया है।

सूत्रों के अनुसार, पार्टी के भीतर एक वर्ग यह मानता है कि चुनावी रणनीति और जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय में कमी के कारण परिणाम अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहे। हालांकि पार्टी नेतृत्व ने इन सभी आरोपों को खारिज करते हुए इसे आंतरिक विचार-विमर्श का हिस्सा बताया है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि टीएमसी जैसी मजबूत क्षेत्रीय पार्टी में इस तरह की अंदरूनी चर्चाएं सामान्य हैं, लेकिन यदि यह असंतोष खुलकर सामने आता है तो इसका प्रभाव पार्टी की संगठनात्मक मजबूती पर पड़ सकता है। खासकर तब जब राज्य में विपक्ष पहले से ही सक्रिय और मजबूत स्थिति में नजर आ रहा है।

इसी बीच यह भी चर्चा है कि कुछ विधायकों की अनुपस्थिति केवल औपचारिक नहीं बल्कि संकेतात्मक हो सकती है, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पार्टी के भीतर फिलहाल स्थिति को नियंत्रित करने और एकजुटता बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं।

फिलहाल टीएमसी नेतृत्व ने स्पष्ट संदेश दिया है कि पार्टी में किसी प्रकार की फूट नहीं है और सभी विधायक संगठन के साथ मजबूती से जुड़े हुए हैं। लेकिन राजनीतिक घटनाक्रम जिस तेजी से बदल रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि आने वाले दिनों में पश्चिम बंगाल की राजनीति और अधिक दिलचस्प और जटिल हो सकती है।

अपग्रेडेड यात्री आरक्षण प्रणाली (Passenger Reservation System) में अगस्त से रेल गाड़ियों की होगी शिफ्टिंग

40 साल पुरानी इस प्रणाली से अपग्रेडेड सिस्टम पर गाड़ियों की शिफ्टिंग होते समय यात्रियों को परेशानी न हो इसलिए रेल मंत्री ने अधिकारियों को दिए निर्देश

आज रेल भवन में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक में 40 साल पुरानी आरक्षण प्रणाली में अपग्रेडेड सिस्टम पर गाड़ियों की शिफ्टिंग होते समय यात्रियों को परेशानी न हो इसलिए अधिकारियों को निर्देश दिए । इस बैठक में रेल राज्य मंत्री वी. सोमन्ना और रवनीत सिंह बिट्टू भी उपस्थित थे।

1986 में शुरू हुई इस प्रणाली में पिछले 40 साल में कई छोटे बदलाव किए गए । लेकिन अब इसमें आमूलचूल परिवर्तन किया गया है । अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर इसके क्षमता का विस्तार किया गया है ।

रेल आरक्षण प्रणाली ने कई महत्वपूर्ण पड़ाव देखें है I वर्ष 2002 में भारतीय रेलवे ने ticketing में internet का प्रयोग शुरू किया। आज ये प्रणाली इतनी लोकप्रिय है कि देश की ज्यादातर आबादी खिड़की की ओर रुख नहीं करती। देश में आज जितनी भी ticketing की माँग है उसका बड़ा हिस्सा (₹88%) online माध्यम से होता है।

भारतीय रेल का मोबाइल ऐप रेलवन यात्रियों के बीच बड़ी तेजी से लोकप्रिय

हो रहा है। रेलवन ऐप की शुरुआत पिछले साल जुलाई में हुई थी। एक साल से कम समय में ही देशभर में अब तक 3.5 करोड़ डाउनलोड हो चुके हैं।

इस ऐप के लोकप्रिय होने के कई कारणों में से सबसे बड़ा कारण यह है कि यह ऐप देश के आम आदमी को रेल संबंधी सभी जानकारियाँ तो देता ही है, टिकटिंग तथा अन्य सेवाओं से जुड़ी उनकी शिकायतों का भी निपटारा करता है।

आज जब आप अपनी टिकट बनाते हैं, तो रेलवन ऐप आपको यह बताता है कि आपकी वेटिंग में दिख रही टिकट कन्फर्म होगी या नहीं। टिकट के कन्फर्म होने की सटीक संभावना भी अब आपको एआई के माध्यम से रेलवन ऐप बताने लगा है। यह नई सुविधा इस साल की शुरुआत से ही लागू की गई है, जिसे लोग काफी पसंद कर रहे हैं। रेलवन ऐप पर वेटिंग टिकट के कन्फर्म होने के अनुमान की सटीकता पहले के 53 प्रतिशत से बढ़कर अब 94 प्रतिशत तक पहुँच गई है।

रेलवन ऐप में इस तरह की कई एकीकृत एवं आधुनिक सुविधाएँ हैं, जो रेल संबंधी अन्य सभी सेवाओं को भी अपने में समाहित किए हुए हैं। जैसे - आरक्षित, अनारक्षित तथा प्लेटफॉर्म आदि विभिन्न प्रकार के टिकटों की बुकिंग, रद्दीकरण तथा रिफंड।

इस के साथ साथ आपके हमारे मौजूदा टिकट की वेटिंग status की ताजा स्थिति, ट्रेन के आने जाने का समय, ट्रेन की मौजूदा स्थिति, ट्रेन के आने-जाने का platform, आप के coach की position, रेल मदद जैसी महत्वपूर्ण जानकारियाँ रेलवन (RailOne) app पे हैं। अपनी यात्रा के दौरान आप अपना food भी रेलवन (RailOne) app पर order कर सकते हैं। App आपको ये विकल्प देता है कि आप की seat तक आपका मनपसंद खाना पहुंच सके। आरामदायक व सेवापरक सुविधाओं से लैस यह रेलवन (RailOne) app तेजी से लोकप्रिय हो रहा है ।

इसके साथ-साथ आपके मौजूदा टिकट की वेटिंग स्थिति की ताज़ा जानकारी, ट्रेन के आने-जाने का समय, ट्रेन की वर्तमान स्थिति, ट्रेन के आने-जाने का प्लेटफॉर्म, आपके कोच की स्थिति जैसी महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी रेलवन ऐप पर उपलब्ध हैं। अपनी यात्रा के दौरान आप रेलवन ऐप पर भोजन भी ऑर्डर कर सकते हैं। यह ऐप आपको यह सुविधा देता है कि आपकी सीट तक आपका मनपसंद खाना पहुँच सके। आरामदायक एवं सेवापरक सुविधाओं से लैस यह रेलवन ऐप तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

रोज़ाना इस app के माध्यम से देश भर में 9.29 लाख टिकिटे book हो रही हैं। इसमें 7.2 लाख टिकटें अनारक्षित तथा अन्य 2.09 लाख आरक्षित टिकटें हैं। अनारक्षित टिकटों में platform टिकट भी शामिल है। Android तथा IOS पर रेलवन (RailOne) app को लोग काफी पसंद कर रहे है। जहाँ 3 करोड़ 16 लाख लोगो ने इसे गूगल प्लेस्टोर से अब तक डाउनलोड किया है, वहीं 33.17 लाख लोगो ने इसे ऐपल phones में डाउनलोड किया है।

देश में यात्रियों के लिए भारतीय रेल एक जीवन रेखा है - भारतीय रेल ने 2024-25 में यात्रियों के टिकटों पर 60,239 करोड़ रुपये की सब्सिडी दी। यह रेलवे पर यात्रा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को औसतन 43% की छूट के बराबर है। दूसरे शब्दों में, यदि सेवा प्रदान करने की लागत 100 रुपये है, तो टिकट की कीमत केवल 57 रुपये है।

भाजपा का फोकस पंजाब पर, 2027 चुनाव से पहले बड़ा राजनीतिक विस्तार अभियान; सिख समुदाय को साधने की रणनीति तेज

नई दिल्ली। देश की राजनीति में अब एक बार फिर पंजाब केंद्र में आता दिख रहा है, जहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आगामी विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीतिक तैयारी तेज कर दी है। पार्टी ने राज्य में संगठनात्मक विस्तार, राजनीतिक गठजोड़ और समुदाय आधारित संपर्क अभियान को प्राथमिकता देते हुए इसे अपने प्रमुख चुनावी एजेंडे में शामिल कर लिया है। लगभग आठ महीने बचे चुनावों को देखते हुए भाजपा ने पंजाब में "ग्राउंड लेवल मिशन मोड" में काम शुरू कर दिया है।

पंजाब, जहां लंबे समय तक भाजपा की उपस्थिति सीमित क्षेत्रों तक ही मानी जाती रही है, अब पार्टी के लिए एक बड़े राजनीतिक युद्धक्षेत्र के रूप में उभर रहा है। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि राज्य में राजनीतिक असंतोष और बदलते समीकरणों का लाभ उठाकर एक मजबूत विकल्प तैयार किया जा सकता है। इसी रणनीति के तहत संगठन स्तर पर तेजी से काम किया जा रहा है और चुनाव प्रभारियों की एक मजबूत टीम तैयार करने की प्रक्रिया भी अंतिम चरण में बताई जा रही है।

सूत्रों के अनुसार भाजपा का शुरुआती फोकस आम आदमी पार्टी (AAP) के भीतर उभरते राजनीतिक विभाजन और असंतोष पर है। हाल के महीनों में राज्यसभा और संगठनात्मक स्तर पर कुछ बदलावों और नेताओं की गतिविधियों ने राजनीतिक चर्चाओं को जन्म दिया है। पार्टी रणनीतिक रूप से इन परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रही है। माना जा रहा है कि आने वाले समय में आम आदमी पार्टी के कुछ विधायकों तक भी भाजपा अपनी पहुंच बढ़ा सकती है, जिससे विधानसभा समीकरणों पर असर पड़ सकता है।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि इस बार चुनावी रणनीति केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह एक विस्तृत सामाजिक और क्षेत्रीय संपर्क अभियान के रूप में भी आगे बढ़ेगी। इसी के तहत भाजपा ने पंजाब में सिख समुदाय को केंद्र में रखकर विशेष रणनीति तैयार की है। पार्टी का मानना है कि पंजाब की राजनीति में सिख मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं, इसलिए इस समुदाय के साथ भरोसेमंद संवाद स्थापित करना सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

पिछले कुछ वर्षों में भाजपा ने सिख समुदाय से जुड़े कई प्रमुख नेताओं को संगठन और सरकार में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी हैं। इनमें संसद से लेकर केंद्रीय मंत्रिमंडल और अन्य प्रशासनिक पदों तक प्रतिनिधित्व बढ़ाया गया है। पार्टी का तर्क है कि इससे यह संदेश जाता है कि भाजपा केवल राष्ट्रीय स्तर की नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता को भी साथ लेकर चलने वाली पार्टी है।

भाजपा के शीर्ष नेताओं में इकबाल सिंह लालपुरा जैसे वरिष्ठ सिख चेहरे पार्टी के भीतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अलावा केंद्र सरकार में हरदीप सिंह पुरी और रवनीत सिंह बिट्टू जैसे नेता पार्टी की सिख समुदाय से जुड़ी रणनीति को मजबूत आधार प्रदान कर रहे हैं। हाल के समय में एच. एस. फूलका जैसे नेताओं के पार्टी में शामिल होने से भी संगठन को नया विस्तार मिला है।

पार्टी की रणनीति में पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह जैसे अनुभवी राजनीतिक चेहरों को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिनका पंजाब की राजनीति में व्यापक प्रभाव रहा है। इसी तरह मनजिंदर सिंह सिरसा, एस. एस. अहलूवालिया, आर. पी. सिंह और मनप्रीत सिंह बादल जैसे नेताओं की भूमिका भी पार्टी के सामाजिक और राजनीतिक विस्तार में अहम मानी जा रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा अब पंजाब में केवल बाहरी ताकत के रूप में नहीं बल्कि एक प्रतिस्पर्धी राजनीतिक विकल्प के रूप में खुद को स्थापित करने की कोशिश कर रही है। इसके लिए पार्टी न केवल संगठनात्मक स्तर पर काम कर रही है, बल्कि स्थानीय मुद्दों, कृषि, रोजगार और युवाओं से जुड़े विषयों को भी अपने एजेंडे में शामिल कर रही है।

सूत्रों के अनुसार चुनावी कमान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हाथों में ही रहने की संभावना है, जैसा कि कई अन्य राज्यों के चुनावों में देखा गया है। पार्टी की रणनीति में बूथ स्तर तक मजबूत नेटवर्क तैयार करना, स्थानीय नेताओं को सक्रिय करना और जमीनी कार्यकर्ताओं को जोड़ना प्रमुख प्राथमिकताएं हैं।

चांदखेड़ा रोड–साबरमती 'D' केबिन नई ब्रॉड गेज Y-कनेक्टिविटी लाइन का CRS निरीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न

पश्चिम सर्किल के रेल संरक्षा आयुक्त (CRS) ई. श्रीनिवास ने आज दिनांक 07 मई 2026 को पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में चांदखेड़ा रोड–साबरमती 'डी' केबिन (लगभग 1.00 किमी) इंटरसेक्शन की नई ब्रॉड गेज Y-कनेक्टिविटी लाइन का संरक्षा निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने इस नई लाइन पर मोटर ट्रॉली द्वारा विस्तृत निरीक्षण किया तथा लाइन की संरक्षा एवं परिचालन क्षमता का आकलन किया। इसके अतिरिक्त इस सेक्शन पर स्पीड ट्रायल भी सफलतापूर्वक किया गया।

इस निरीक्षण के दौरान प्रदीप गुप्ता, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), श्री वेद प्रकाश, मंडल रेल प्रबंधक अहमदाबाद सहित निर्माण एवं ओपन लाइन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

साबरमती 'डी' केबिन बाईपास का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि उत्तर एवं पूर्वी भारत से आने-जाने वाली

ट्रेनों, विशेषकर सौराष्ट्र क्षेत्र की ट्रेनों, को व्यस्त साबरमती 'डी' केबिन क्षेत्र में प्रवेश किए बिना वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध हो सकेगा। इससे ट्रेनों की आवाजाही अधिक तेज एवं निर्बाध होगी तथा सौराष्ट्र क्षेत्र से आने-जाने वाले यात्रियों के यात्रा समय में भी कमी आएगी। इसके अलावा लोको रिवर्सल समाप्त होने से साबरमती लाइन पर अधिक ट्रेनें चलाने के लिए अधिक सुविधा उपलब्ध हो जाएगी।

चांदखेड़ा रोड बाईपास के माध्यम से ट्रैफिक डायवर्ट होने से अहमदाबाद (कालूपुर) एवं साबरमती स्टेशनों पर ट्रेनों का दबाव कम होगा, जिससे परिचालन दक्षता में वृद्धि होगी। यह नई Y-कनेक्टिविटी भविष्य में अधिक ट्रेनों के संचालन में भी सहायक सिद्ध होगी।

इस परियोजना के पूर्ण होने के साथ उत्तर गुजरात एवं सौराष्ट्र क्षेत्र के यात्रियों को आधुनिक एवं बेहतर रेल सुविधाएं उपलब्ध होंगी। बेहतर रेल संपर्क के कारण चांदखेड़ा एवं आसपास के क्षेत्रों में व्यावसायिक गतिविधियों तथा रियल एस्टेट विकास को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है, जिससे अहमदाबाद की आर्थिक प्रगति को नई गति मिलेगी।

नई लाइन भारतीय रेलवे को एक वैकल्पिक एवं सुगम परिचालन मार्ग प्रदान करेगी, जिससे पश्चिम रेलवे नेटवर्क में यात्री सुविधाओं एवं रेल संचालन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होगा।

पीएमईजीपी योजना से देश में बड़ा रोजगार सृजन, 36.33 लाख लोगों को मिला काम; चार लाख से अधिक सूक्ष्म उद्यम स्थापित

नई दिल्ली। केंद्र सरकार की प्रमुख स्वरोजगार प्रोत्साहन योजना प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (Prime Minister's Employment Generation Programme – पीएमईजीपी) के तहत देश में रोजगार सृजन और सूक्ष्म उद्यमों के विस्तार में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है। वित्त वर्ष 2021-22 से 2025-26 की अवधि में इस योजना के माध्यम से लगभग 36.33 लाख लोगों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित किए गए हैं। साथ ही देशभर में 4 लाख से अधिक सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना की गई है, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वरोजगार को मजबूती मिली है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा जारी जानकारी के अनुसार पीएमईजीपी योजना का संचालन खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) के माध्यम से किया जाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बेरोजगार युवाओं, पहली पीढ़ी के उद्यमियों और छोटे व्यवसाय शुरू करने के इच्छुक लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। इसके तहत लाभार्थियों को बैंक ऋण पर मार्जिन मनी सब्सिडी दी जाती है, जिससे वे गैर-कृषि क्षेत्र में नए सूक्ष्म उद्यम स्थापित कर सकें।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार 15वें वित्त आयोग की अवधि के दौरान पीएमईजीपी योजना का प्रदर्शन न केवल निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप रहा, बल्कि कई मामलों में उससे बेहतर भी रहा। इस अवधि में योजना के लिए कुल 13,554.42 करोड़ रुपये का बजटीय आवंटन किया गया था, जिसका पूर्ण उपयोग किया गया। इस वित्तीय सहायता के माध्यम से 4,03,706 सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना संभव हुई, जबकि प्रारंभिक लक्ष्य 4,02,000 उद्यमों का रखा गया था। यह आंकड़ा दर्शाता है कि योजना का क्रियान्वयन प्रभावी और व्यापक स्तर पर हुआ है।

मंत्रालय का कहना है कि पीएमईजीपी के माध्यम से देश में उद्यमिता आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे-छोटे व्यवसायों की स्थापना से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़े हैं और पलायन की प्रवृत्ति में कमी आई है। योजना ने न केवल बेरोजगार युवाओं को अवसर दिया है, बल्कि महिलाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति समुदायों और अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों को भी आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस योजना के तहत विनिर्माण (manufacturing) और सेवा (service) क्षेत्र दोनों में उद्यमों की स्थापना को प्रोत्साहन दिया गया है। छोटे उद्योग जैसे खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, कपड़ा उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स मरम्मत, ब्यूटी पार्लर, मोबाइल रिपेयरिंग, डेयरी आधारित व्यवसाय और अन्य स्थानीय स्तर के उद्योगों में तेजी देखी गई है। इससे न केवल रोजगार सृजन हुआ है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई ऊर्जा मिली है।

विशेषज्ञों का मानना है कि पीएमईजीपी जैसी योजनाएं भारत में आत्मनिर्भर भारत अभियान को मजबूत आधार प्रदान कर रही हैं। छोटे उद्यमों की वृद्धि से स्थानीय उत्पादन बढ़ता है, जिससे आय का वितरण अधिक व्यापक स्तर पर होता है। इसके साथ ही यह योजना युवाओं को नौकरी मांगने के बजाय नौकरी देने वाला बनने की दिशा में प्रेरित कर रही है।

सरकारी अधिकारियों के अनुसार, योजना की सफलता का एक प्रमुख कारण इसका सरल आवेदन प्रक्रिया और बैंकिंग प्रणाली से जुड़ा होना है। लाभार्थी ऑनलाइन आवेदन के माध्यम से योजना का लाभ ले सकते हैं और बैंकों के सहयोग से ऋण प्राप्त कर सकते हैं। मार्जिन मनी सब्सिडी के कारण शुरुआती निवेश का बोझ कम हो जाता है, जिससे नए उद्यम शुरू करना आसान हो जाता है।

आंकड़ों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में इस योजना के तहत महिलाओं की भागीदारी में भी वृद्धि हुई है। कई राज्यों में महिला उद्यमियों ने छोटे व्यवसाय शुरू कर आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं। इससे न केवल परिवार की आय में वृद्धि हुई है, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं की आर्थिक भूमिका मजबूत हुई है।

7 मई, विश्व एथलेटिक्स दिवस

गुजरात में खेल महाकुंभ की पहल से एथलेटिक्स को मिली नई उड़ान ग्राम से लेकर राज्य स्तर तक खिलाड़ियों की प्रतिभा में आया निखार

▸▸ खेल महाकुंभ 2025 के अंतर्गत नडियाद में आयोजित राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतिस्पर्धा में चमके 9383 खिलाड़ी

▸▸ राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतिस्पर्धा में दौड़, लंबी कूद, ऊंची कूद, गोला फेंक और हैमर थ्रो सहित 390 इवेंट का आयोजन, विजेता खिलाड़ियों को मेडल और ट्रैकसूट देकर सम्मानित किया गया

गांधीनगर : गुजरात के युवा आज खेल क्षेत्र में राज्य का नाम रोशन कर रहे हैं और खेलों को अपना पेशा बना रहे हैं। इसका श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता को जाता है। 2010 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने खेल महाकुंभ की एक नई पहल की, जिससे राज्य के खिलाड़ियों में नया उत्साह पैदा हुआ है और दूरदराज के क्षेत्रों से भी प्रतिभाएं सामने आ रही हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष 7 मई को विश्व एथलेटिक्स दिवस मनाया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य युवाओं में फिटनेस, अनुशासन और खेल के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। वर्ष 2026 के लिए विश्व एथलेटिक्स दिवस की थीम 'स्पोर्ट : बिल्डिंग ब्रिजेस, ब्रेकिंग बैरियर्स' है, जो युवाओं को मजबूत बनाने और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक संबंधों, एकता और समानता को प्रोत्साहन देने में एथलेटिक्स की भूमिका को दर्शाता है। एथलेटिक्स को बेसिक ऑफ ऑल स्पोर्ट्स कहा जाता है यानी यह सभी खेलों का आधार है।

गुजरात में खेल महाकुंभ पहल के तहत आयोजित होने वाली एथलेटिक्स प्रतिस्पर्धा भी इसी विजन को साकार कर रही है। इस पहल के माध्यम से ग्राम स्तर से लेकर राज्य स्तर तक के खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का एक शानदार मंच मिल रहा है।

खेल महाकुंभ 2025 के अंतर्गत राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतिस्पर्धा में 9383 खिलाड़ियों ने लिया हिस्सा

इस वर्ष 16 जनवरी से 3 फरवरी के दौरान खेड़ा जिले के नडियाद शहर में खेल महाकुंभ 2025 के अंतर्गत राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतिस्पर्धा आयोजित हुई, जिसमें राज्य के कुल 9383 खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने इस प्रतिस्पर्धा का हाई परफॉर्मेंस सेंटर में सुचारू रूप से आयोजन किया।

प्रतिस्पर्धा में अंडर-9, अंडर-11, अंडर-14 और अंडर-17 तथा ओपन एज ग्रुप के 4694 लड़के और 4689 लड़कियां शामिल थीं, जो राज्य में खेल के प्रति बढ़ती रुचि और व्यापक भागीदारी को दिखाता है।

दौड़, लंबी कूद, ऊंची कूद, गोला फेंक और हैमर थ्रो सहित 390 इवेंट का आयोजन

खेल महाकुंभ 2025 की राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतिस्पर्धा में 30 मीटर से लेकर 5000 मीटर की दौड़, 80, 100, 110 और 400 मीटर बाधा दौड़ (हर्डल्स), लंबी कूद, ऊंची कूद, बांस कूद, ट्रिपल जंप, गोला फेंक, चक्का फेंक, भाला फेंक, हैमर थ्रो, रिले रेस और तेज चाल जैसी कुल 390 इवेंट्स का आयोजन किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मेडल और ट्रैकसूट प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया।

खेल महाकुंभ की पहल से गुजरात खेल क्षेत्र में अग्रणी बना

खेल महाकुंभ पहल के परिणामस्वरूप गुजरात को सरिता गायकवाड़, मयूर मालविया, रुचित मोरी और मुरली गावित जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी मिले हैं। डांग की 'गोल्डन गर्ल' सरिता गायकवाड़ ने एशियाई खेल 2018 में महिला 4x400 मीटर रिले में स्वर्ण पदक जीता था, जबकि मुरली गावित ने 2019 की एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों की 10,000 मीटर दौड़ की प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीतक गुजरात का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। गुजरात सरकार ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देकर राज्य को खेल क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम और गौतम अदाणी की मुलाकात, निवेश और आर्थिक सहयोग पर हुई अहम चर्चा

मुंबई। भारत दौरे पर आए वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम ने गुरुवार को मुंबई में उद्योगपति गौतम अदाणी से एक महत्वपूर्ण मुलाकात की। यह बैठक भारत-वियतनाम व्यापार मंच के समापन के तुरंत बाद दक्षिण मुंबई के एक प्रमुख होटल में आयोजित की गई, जिसे दोनों देशों के बीच आर्थिक और कारोबारी संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार यह मुलाकात लगभग 15 मिनट तक चली, जिसमें दोनों पक्षों के बीच निवेश, बुनियादी ढांचा विकास और व्यापार विस्तार से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होने की संभावना जताई जा रही है। हालांकि इस बातचीत के विस्तृत बिंदुओं को लेकर अब तक कोई आधिकारिक बयान सार्वजनिक नहीं किया गया है।

गौतम अदाणी, जो अदाणी समूह के अध्यक्ष हैं, भारत के सबसे बड़े औद्योगिक घरानों में से एक का नेतृत्व करते हैं। उनका समूह बंदरगाह, ऊर्जा, नवीकरणीय ऊर्जा, सीमेंट, लॉजिस्टिक्स, एयरपोर्ट और उभरती तकनीकों जैसे क्षेत्रों में सक्रिय है। पिछले कुछ वर्षों में अदाणी समूह ने दक्षिण-पूर्व एशिया के बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ाने की रणनीति अपनाई है, जिसमें वियतनाम एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है। वियतनाम वर्तमान में एशिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक माना जाता है, जहां विनिर्माण, निर्यात और विदेशी निवेश में लगातार वृद्धि हो रही है। ऐसे में भारतीय कंपनियों की वहां बढ़ती रुचि दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को नए स्तर पर ले जाने की संभावना पैदा कर रही है।

जानकारी के अनुसार, अदाणी समूह पहले ही वियतनाम में बड़े पैमाने पर निवेश की योजना की घोषणा कर चुका है। पिछले वर्ष समूह ने बुनियादी ढांचा, नवीकरणीय ऊर्जा और नई प्रौद्योगिकी परियोजनाओं में लगभग 10 अरब डॉलर तक के निवेश की रूपरेखा पेश की थी। इस प्रस्तावित निवेश को भारत और वियतनाम के बीच रणनीतिक आर्थिक साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत और वियतनाम के बीच बढ़ते कारोबारी संबंध न केवल द्विपक्षीय व्यापार को गति देंगे, बल्कि एशिया में आपूर्ति श्रृंखला (supply chain) को भी नया स्वरूप प्रदान करेंगे। वैश्विक स्तर पर चीन पर निर्भरता कम करने की रणनीति के तहत भी वियतनाम एक महत्वपूर्ण विनिर्माण केंद्र के रूप में उभर रहा है, जिससे भारतीय कंपनियों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

जेल की सलाखों के पीछे बैठा 'मास्टरमाइंड', सूरत SBI डकैती में बिहार कनेक्शन से हड़कंप

सूरत। सूरत के वराछा इलाके में स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) शाखा में हुई करीब 50 लाख रुपये की सनसनीखेज डकैती मामले में पुलिस जांच के दौरान ऐसा खुलासा हुआ है, जिसने सुरक्षा एजेंसियों को भी चौंका दिया है। अब तक की जांच में सामने आया है कि इस पूरी वारदात का मास्टरमाइंड बिहार की बेउर सेंट्रल जेल में बंद कुख्यात अपराधी कुंदन कुमार उर्फ कुंदन भगत है, जो जेल की सलाखों के पीछे बैठकर अपने इंटर-स्टेट गैंग को संचालित कर रहा था। पुलिस का दावा है कि आरोपी जेल में रहते हुए एक विशेष मोबाइल एप्लीकेशन और गुप्त संचार माध्यमों के जरिए अपने गिरोह के सदस्यों के संपर्क में था और वहीं से बैंक डकैती की पूरी साजिश रची गई।

सूरत पुलिस की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे इस मामले के तार कई राज्यों तक जुड़ते दिखाई दे रहे हैं। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, यह कोई सामान्य लूट की घटना नहीं थी, बल्कि लंबे समय तक रेकी, तकनीकी योजना और संगठित नेटवर्क के जरिए अंजाम दी गई बड़ी आपराधिक साजिश थी। जांच एजेंसियों का मानना है कि गिरोह ने वारदात से पहले सूरत शहर की करीब 10 बैंकों की रेकी की थी। आरोपियों ने बैंक की सुरक्षा व्यवस्था, पुलिस पेट्रोलिंग, कर्मचारियों की गतिविधियों और आसपास के रास्तों का गहराई से अध्ययन किया था। इसके बाद वराछा स्थित SBI शाखा को सबसे आसान और सुरक्षित टारगेट मानते हुए लूट की योजना को अंतिम रूप दिया गया।

सूत्रों के मुताबिक, आरोपियों ने इस डकैती को अंजाम देने के लिए सूरत नगर निगम चुनाव के समय को चुना। पुलिस जांच में सामने आया है कि गिरोह को पहले से अंदेशा था कि चुनावी ड्यूटी में शहर का बड़ा पुलिस बल व्यस्त रहेगा, जिससे बैंक लूट के बाद भाग निकलना अपेक्षाकृत आसान होगा। यही वजह रही कि वारदात को बेहद सुनियोजित तरीके

से अंजाम दिया गया। पुलिस अब इस एंगल से भी जांच कर रही है कि क्या आरोपियों को स्थानीय स्तर पर किसी व्यक्ति से इनपुट या मदद मिली थी।

इस मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह सामने आई है कि बेउर सेंट्रल जेल में बंद कुंदन भगत लगातार अपने गैंग को निर्देश दे रहा था। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपी जेल के भीतर मोबाइल फोन और इंटरनेट आधारित एप्लीकेशन का इस्तेमाल कर रहा था। शुरुआती जांच में संकेत मिले हैं कि गिरोह के सदस्य एन्क्रिप्टेड ऐप्स के जरिए संपर्क में थे, ताकि पुलिस सर्विलांस से बचा जा सके। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि जेल के भीतर आरोपी तक मोबाइल और इंटरनेट की सुविधा कैसे पहुंची और क्या इसमें जेल प्रशासन के किसी व्यक्ति की भूमिका रही है।

कुंदन भगत का आपराधिक रिकॉर्ड भी बेहद गंभीर बताया जा रहा है। जांच एजेंसियों के अनुसार, वह देहरादून में हुई 12 करोड़ रुपये की रिलायंस ज्वेलरी शोरूम डकैती मामले में भी आरोपी रह चुका है। उसके खिलाफ बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड और उत्तराखंड समेत कई राज्यों में संगठित अपराध, लूट और डकैती के मामले दर्ज हैं। पुलिस का मानना है कि कुंदन लंबे समय से पेशेवर अपराधियों का नेटवर्क चला रहा था और जेल में बंद होने के बावजूद उसने अपना आपराधिक तंत्र सक्रिय रखा। सूरत पुलिस ने इस मामले में अब तक उत्तर प्रदेश के अयोध्या और गोंडा इलाके से शुभम कुमार ठाकुर और विकास सिंह नामक दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों की गिरफ्तारी टेक्निकल सर्विलांस, मोबाइल लोकेशन और ह्यूमन इंटेलिजेंस के आधार पर की गई। पूछताछ के दौरान दोनों आरोपियों ने कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी हैं, जिसके बाद पुलिस को बिहार कनेक्शन का पता चला। सूत्रों का कहना है कि गिरफ्तार आरोपियों ने खुलासा किया है कि पूरी कार्रवाई कुंदन भगत के निर्देश पर की गई थी और लूट की रकम के बंटवारे की योजना भी पहले से तय थी।

पुलिस अब इस पूरे इंटर-स्टेट गैंग के नेटवर्क को खंगालने में जुटी हुई है। जांच एजेंसियों को आशंका है कि गिरोह के सदस्य गुजरात के अलावा बिहार, उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में भी सक्रिय हो सकते हैं। पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि इस गिरोह ने इससे पहले किन-किन राज्यों में वारदातों को अंजाम दिया है। साथ ही इस्तेमाल किए गए हथियारों, भागने के रूट, फर्जी पहचान पत्रों और वित्तीय लेनदेन की भी गहन जांच की जा रही है।

पुलिस कमिश्नर ने मामले को गंभीर बताते हुए कहा कि यह सिर्फ बैंक डकैती का मामला नहीं है, बल्कि जेल के भीतर से संगठित अपराध संचालित होने का बड़ा उदाहरण है। उन्होंने कहा कि यदि जेल में बंद अपराधी बाहर बैठे गैंग को निर्देश दे रहे हैं, तो यह सुरक्षा व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती है। पुलिस अब बिहार पुलिस और केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय बनाकर पूरे नेटवर्क को ध्वस्त करने की तैयारी में है।

इधर, कुंदन भगत को ट्रांजिट रिमांड पर सूरत लाने के लिए पुलिस की विशेष टीम बिहार रवाना हो चुकी है। उम्मीद जताई जा रही है कि सूरत लाकर उससे पूछताछ के बाद कई और बड़े खुलासे हो सकते हैं। पुलिस को शक है कि गिरोह में कुछ ऐसे सदस्य भी शामिल हैं, जो अभी तक जांच एजेंसियों की पकड़ से बाहर हैं और संभव है कि वे अन्य राज्यों में छिपे हों। इस घटना ने बैंक सुरक्षा व्यवस्था और जेल प्रशासन दोनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। जिस तरह एक बंदी जेल के भीतर से आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए संगठित अपराध को अंजाम दे रहा था, उसने सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि अब जेलों में मोबाइल नेटवर्क, इंटरनेट एक्सेस और अंदरूनी गतिविधियों की निगरानी को लेकर नई रणनीति बनाने की जरूरत है। सूरत की इस हाई-प्रोफाइल बैंक डकैती ने शहर में सनसनी फैला दी है। व्यापारिक नगरी माने जाने वाले सूरत में इस तरह की संगठित वारदात ने आम लोगों और व्यापारियों के बीच भी चिंता बढ़ा दी है। हालांकि पुलिस का दावा है कि जल्द ही पूरे गिरोह का पर्दाफाश कर लिया जाएगा और लूट की रकम बरामद करने के साथ-साथ फरार आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

फिलहाल पुलिस की जांच कई स्तरों पर जारी है और आने वाले दिनों में इस मामले में और बड़े खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है। बिहार जेल से संचालित इस गैंग ने जिस तरह तकनीक, प्लानिंग और इंटर-स्टेट नेटवर्क का इस्तेमाल किया, उसने कानून व्यवस्था एजेंसियों के सामने एक नई चुनौती खड़ी कर दी है। अब सबकी नजर पुलिस की अगली कार्रवाई और कुंदन भगत से होने वाली पूछताछ पर टिकी हुई है।

सिजेरियन के बाद बिगड़ी प्रसूताओं की हालत, कोटा अस्पताल की रिपोर्ट ने खड़े किए गंभीर सवाल

कोटा। राजस्थान के कोटा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में सिजेरियन डिलीवरी के बाद प्रसूताओं की लगातार बिगड़ती हालत ने पूरे प्रदेश में चिंता और आक्रोश का माहौल पैदा कर दिया है। मामले ने तब और गंभीर रूप ले लिया जब अस्पताल में भर्ती प्रसूता रागिनी की सोनोग्राफी और मेडिकल रिपोर्ट सामने आई। रिपोर्ट में ऐसे कई चौंकाने वाले संकेत मिले हैं, जो इलाज की गुणवत्ता, संक्रमण नियंत्रण व्यवस्था और अस्पताल प्रशासन की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर रहे हैं। परिजनों का आरोप है कि ऑपरेशन के बाद समय रहते सही निगरानी और उपचार नहीं मिलने से स्थिति लगातार बिगड़ती चली गई, जबकि अस्पताल प्रशासन अब भी किसी प्रकार की लापरवाही से इनकार कर रहा है।

मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार, रागिनी की दोनों किडनियों में "इनक्रीस्ड इकोजेनिसिटी" पाई गई है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह स्थिति सामान्य नहीं मानी जाती और अक्सर गंभीर संक्रमण, सूजन या किडनी डैमेज की ओर संकेत करती है। यही वजह मानी जा रही है कि ऑपरेशन के बाद कई महिलाओं में यूरिन बंद होने जैसी गंभीर शिकायतें सामने आईं। डॉक्टरों का कहना है कि यदि संक्रमण शरीर में तेजी से फैलता है, तो उसका सीधा असर किडनी की कार्यप्रणाली पर पड़ सकता है, जिससे किडनी फेल होने जैसी स्थिति भी

बन जाती है।

रिपोर्ट में सामने आया सबसे चिंताजनक तथ्य "मॉडरेट हेमोपेरिटोनियम" का उल्लेख है। इसका अर्थ है कि पेट की गुहा में असामान्य मात्रा में खून या खून जैसा तरल पदार्थ जमा हो गया था। सोनोग्राफी रिपोर्ट में "ब्लड ऑन एस्पिरेशन" भी दर्ज किया गया है, जिससे संकेत मिलता है कि पेट के अंदर से खून जैसा द्रव निकला। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार यह स्थिति किसी आंतरिक ब्लीडिंग, गंभीर संक्रमण या ऑपरेशन के बाद उत्पन्न जटिलताओं की ओर इशारा कर सकती है। रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि डिलीवरी के बाद गर्भाशय का आकार सामान्य से अधिक बड़ा था, जो शरीर के भीतर गंभीर असंतुलन और संक्रमण की संभावना को दर्शाता है।

सिर्फ किडनी ही नहीं, बल्कि संक्रमण का असर लिवर तक पहुंचने की बात भी रिपोर्ट में सामने आई है। रागिनी की मेडिकल जांच में "माइल्ड हेपेटोमेगाली" दर्ज की गई है, जिसका मतलब है कि लिवर का आकार बढ़ गया था। डॉक्टरों के अनुसार यह शरीर में फैल रहे संक्रमण या अन्य गंभीर शारीरिक तनाव का संकेत हो सकता है। परिजनों का कहना है कि ऑपरेशन के बाद से ही रागिनी लगातार तकलीफ में थी और रात के समय यूरिन बंद होने जैसी गंभीर समस्या सामने आई थी, लेकिन अस्पताल प्रशासन ने इसे गंभीरता से नहीं लिया।

परिवार का आरोप है कि यदि समय रहते विशेषज्ञ डॉक्टरों की निगरानी और उचित उपचार मिलता, तो स्थिति इतनी गंभीर नहीं होती। उनका कहना है कि प्रसूता की हालत लगातार बिगड़ती रही, लेकिन अस्पताल स्टाफ की ओर से अपेक्षित सतर्कता नहीं बरती गई। परिजनों ने यह भी आरोप लगाया कि कई बार शिकायत करने के बावजूद मरीज की स्थिति को सामान्य बताकर टाल दिया गया।

इस पूरे घटनाक्रम ने अस्पताल की संक्रमण नियंत्रण व्यवस्था और ऑपरेशन थिएटर की स्वच्छता को लेकर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि यदि एक ही अस्पताल में सिजेरियन के बाद कई प्रसूताओं में समान लक्षण दिखाई दे रहे हैं, तो यह किसी गंभीर संक्रमण या मेडिकल प्रोटोकॉल में चूक का संकेत हो सकता है। अब यह जांच का विषय बन गया है कि कहीं ऑपरेशन के दौरान इस्तेमाल किए गए उपकरण, दवाइयां या अन्य मेडिकल प्रक्रियाएं संक्रमण का कारण तो नहीं बनीं।

इधर, मामला तूल पकड़ने के बाद अस्पताल प्रशासन ने हाई लेवल जांच की बात कही है। मेडिकल कॉलेज प्रशासन का कहना है कि विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम पूरे मामले की बारीकी से जांच कर रही है और हर मेडिकल पहलू का विश्लेषण किया जा रहा है। प्रशासन ने फिलहाल किसी भी मानवीय चूक या लापरवाही से इनकार किया है। अधिकारियों का कहना है कि रिपोर्ट्स का विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है और जांच पूरी होने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाएगा। हालांकि, रागिनी की मेडिकल रिपोर्ट ने कई सवालों को जन्म दे दिया है। यदि संक्रमण इतना गंभीर था कि उसने किडनी और लिवर दोनों को प्रभावित कर दिया, तो समय रहते इसकी पहचान क्यों नहीं हो सकी? ऑपरेशन के बाद मरीजों की मॉनिटरिंग कितनी प्रभावी थी? क्या अस्पताल में संक्रमण नियंत्रण के मानकों का सही पालन हो रहा था? ऐसे कई सवाल अब स्वास्थ्य विभाग और अस्पताल प्रशासन के सामने खड़े हैं। इस घटना के बाद प्रदेशभर में सरकारी अस्पतालों की स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर बहस तेज हो गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि प्रसूता और नवजात से जुड़े मामलों में जरा सी लापरवाही भी जानलेवा साबित हो सकती है। सिजेरियन ऑपरेशन एक संवेदनशील प्रक्रिया होती है, जिसमें ऑपरेशन के बाद मरीज की लगातार निगरानी, संक्रमण की रोकथाम और समय पर इलाज बेहद जरूरी होता है।

घटना ने आम लोगों के मन में भी डर और असुरक्षा की भावना पैदा कर दी है। कई परिवारों ने अस्पताल प्रशासन से जवाब मांगना शुरू कर दिया है। सोशल मीडिया पर भी यह मामला तेजी से चर्चा में है और लोग दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

"सबका साथ, सबका विकास" के संदेश के साथ सम्राट कैबिनेट का विस्तार, गांधी मैदान में भव्य शपथ ग्रहण; 32 मंत्रियों ने ली शपथ

पटना। बिहार की राजनीति में गुरुवार का दिन बेहद अहम साबित हुआ, जब राजधानी पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के नेतृत्व में नए मंत्रिमंडल का भव्य शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की उपस्थिति ने राजनीतिक माहौल को और अधिक गरम कर दिया। "सबका साथ, सबका विकास" के संदेश के साथ हुए इस मंत्रिमंडल विस्तार को राज्य की राजनीति में एक बड़े रणनीतिक बदलाव के रूप में देखा जा रहा है।

इस अवसर पर कुल 32 मंत्रियों ने शपथ ली, जिनमें भाजपा, जनता दल यूनाइटेड (जदयू), लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) और राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) के प्रतिनिधि शामिल रहे। भाजपा कोटे से 15, जदयू से 12, लोजपा (रामविलास) से 2 तथा हम और आरएलएम से एक-एक मंत्री को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। यह विस्तार न केवल राजनीतिक समीकरणों को साधने का प्रयास माना जा रहा है, बल्कि आगामी चुनावी रणनीति का भी हिस्सा बताया जा रहा है।

गांधी मैदान में आयोजित इस समारोह में हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे। मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की उपस्थिति ने कार्यक्रम को राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया। समारोह के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था और सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे, ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो।

नए मंत्रिमंडल में सामाजिक और जातीय संतुलन को विशेष प्राथमिकता दी गई है। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की टीम में विभिन्न वर्गों और समुदायों को प्रतिनिधित्व देने की कोशिश साफ दिखाई दी। उपमुख्यमंत्री के रूप में विजय चौधरी और बिजेंद्र प्रसाद यादव को जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिन्हें प्रशासनिक अनुभव और राजनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण चेहरा माना जा रहा है।

इस मंत्रिमंडल की एक खास बात यह रही कि इसमें तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के पुत्रों को भी जगह दी गई है। इसके अलावा दो पूर्व केंद्रीय मंत्रियों की संतानों को भी कैबिनेट में शामिल किया गया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि पार्टी ने अनुभव और राजनीतिक विरासत दोनों को संतुलित करने की रणनीति अपनाई है।

भाजपा कोटे से बनाए गए 15 मंत्रियों में सवर्ण, पिछड़ा, दलित और वैश्य समुदायों को संतुलित प्रतिनिधित्व दिया गया है। पार्टी की सूची में राम कृपाल यादव, केदार गुप्ता, नीतीश मिश्रा, मिथलेश तिवारी, रमा निषाद, विजय कुमार सिन्हा, दिलीप जायसवाल, प्रमोद चंद्रवंशी, लखेंद्र पासवान, संजय टाइगर, इंजीनियर शैलेन्द्र कुमार, नंद किशोर राम, रामचंद्र प्रसाद, अरुण शंकर प्रसाद और श्रेयसी सिंह जैसे नाम शामिल हैं। भाजपा ने विशेष रूप से वैश्य समुदाय को मजबूत प्रतिनिधित्व देकर व्यापारिक वर्ग को साधने का स्पष्ट संदेश दिया है। जदयू ने अपने 12 मंत्रियों के माध्यम से सामाजिक संतुलन की कोशिश की है। पार्टी की सूची में निशांत कुमार, श्रवण कुमार, अशोक चौधरी, लेसी सिंह, मदन सहनी, सुनील कुमार, जमा खान, भगवान सिंह कुशवाहा, शीला मंडल, दामोदर राउत, बुलो मंडल और रत्नेश सदा को शामिल किया गया है। जदयू ने कुर्मी, दलित, मल्लाह, धानुक और अल्पसंख्यक समुदायों को प्रतिनिधित्व देकर अपने पारंपरिक सामाजिक समीकरण को मजबूत करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय से जमा खान को एकमात्र मंत्री बनाकर अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है। लोजपा (रामविलास) कोटे से संजय पासवान और संजय सिंह ने मंत्री पद की शपथ ली, जबकि हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) से संतोष मांझी और राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) से दीपक प्रकाश को मंत्रिमंडल में जगह दी गई है।

रॉन्ग साइड दौड़ी नगर निगम की बस, पालनपुर रोड पर मची अफरा-तफरी; ट्रैफिक व्यवस्था पर उठे बड़े सवाल

सूरत। सूरत शहर में ट्रैफिक नियमों के सख्त अमल और लगातार चल रहे जुर्माना अभियानों के बीच नगर निगम की सिटी बस द्वारा खुलेआम नियमों की धज्जियां उड़ाने का मामला सामने आने के बाद प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठने लगे हैं। पालनपुर इलाके में बुधवार सुबह नगर निगम की एक सिटी बस रॉन्ग साइड तेज रफ्तार से दौड़ती दिखाई दी, जिससे सड़क पर कुछ समय के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया। अचानक सामने से बस को गलत दिशा में आते देख कई वाहन चालकों को ब्रेक लगाकर अपने वाहन सड़क किनारे करने पड़े। स्थानीय लोगों का कहना है कि थोड़ी सी चूक बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती थी।

जानकारी के अनुसार, घटना बुधवार सुबह करीब 8:30 बजे की है। पाल से रॉयल डाइंग तक बनी नई सीसी रोड पर नगर निगम की सिटी बस पाल-सुडा आवास गली से निकलकर पालनपुर की ओर गलत दिशा में प्रवेश कर गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बस सामान्य गति से नहीं बल्कि तेज रफ्तार में रॉन्ग साइड चल रही थी। सुबह का समय होने के कारण सड़क पर

दफ्तर जाने वाले लोग, स्कूल वाहन और दोपहिया चालकों की आवाजाही काफी अधिक थी। ऐसे में अचानक सामने से आती बस को देखकर वाहन चालकों में घबराहट फैल गई।

स्थानीय व्यापारियों और राहगीरों का कहना है कि बस चालक ने नियमों की पूरी तरह अनदेखी करते हुए गलत दिशा में वाहन चलाया। कुछ वाहन चालकों को अचानक ब्रेक लगाने पड़े, जबकि कई लोगों ने टक्कर से बचने के लिए अपने वाहन सड़क के किनारे उतार दिए। घटना के दौरान कुछ सेकंड के लिए सड़क पर बेहद खतरनाक स्थिति बन गई थी। हालांकि राहत की बात यह रही कि किसी प्रकार का बड़ा हादसा नहीं हुआ, लेकिन लोगों में इसे लेकर भारी नाराजगी देखने को मिली।

घटना के बाद स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन और ट्रैफिक विभाग के खिलाफ नाराजगी जाहिर की। लोगों का कहना है कि शहर में ट्रैफिक पुलिस लगातार हेलमेट, सीट बेल्ट, नो पार्किंग और अन्य नियमों को लेकर अभियान चला रही है। जगह-जगह चेकिंग कर आम वाहन चालकों से भारी जुर्माना वसूला जा रहा है। लेकिन जब सरकारी या नगर निगम के वाहन नियमों का उल्लंघन करते हैं, तब संबंधित विभाग मौन हो जाता है। नागरिकों ने आरोप लगाया कि ट्रैफिक नियमों को लागू करने में दोहरा मापदंड अपनाया जा रहा है।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि शहरभर में CCTV कैमरों और ई-चालान व्यवस्था के जरिए आम नागरिकों पर कड़ी नजर रखी जाती है। छोटी-सी गलती पर भी तुरंत चालान जारी कर दिया जाता है, लेकिन सार्वजनिक परिवहन से जुड़े वाहनों पर कार्रवाई के मामले में अक्सर ढिलाई दिखाई देती है। लोगों ने सवाल उठाया कि यदि कोई आम नागरिक रॉन्ग साइड वाहन चलाता, तो उसके खिलाफ तुरंत कार्रवाई होती, लेकिन नगर निगम की बस के मामले में क्या कदम उठाए जाएंगे, यह देखने वाली बात होगी। घटना के बाद सोशल मीडिया पर भी लोगों ने वीडियो और तस्वीरें साझा कर प्रशासन पर सवाल उठाने शुरू कर दिए। कई लोगों ने लिखा कि जब नियम बनाने और लागू करने वाले विभाग ही उनका पालन नहीं करेंगे, तो आम जनता से अनुशासन की उम्मीद कैसे की जा सकती है। लोगों का कहना है कि सार्वजनिक परिवहन के ड्राइवरों को विशेष प्रशिक्षण और जिम्मेदारी के साथ वाहन चलाना चाहिए, क्योंकि उनकी एक गलती से कई लोगों की जान खतरे में पड़ सकती है। स्थानीय नागरिकों ने मांग की है कि मामले की जांच कर संबंधित बस चालक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही नगर निगम और ट्रैफिक विभाग यह सुनिश्चित करे कि भविष्य में इस तरह की घटनाएं दोबारा न हों।

सूरत से शुरू होगा "कांग्रेस बचाओ अभियान", संगठन पुनर्गठन की बड़ी रणनीति
गुजरात में ज़ोनवार सम्मेलन से नई राजनीतिक दिशा तय करने की तैयारी

सूरत। गुजरात की राजनीति में एक बार फिर कांग्रेस संगठन को मजबूत करने की बड़ी कवायद शुरू हो गई है। आगामी 2027 विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए पार्टी ने "कांग्रेस बचाओ अभियान" की शुरुआत करने का निर्णय लिया है। इस अभियान की शुरुआत सूरत से की जाएगी और इसे पूरे राज्य में चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि संगठनात्मक कमजोरियों को दूर किए बिना चुनावी मुकाबले में मजबूती हासिल करना संभव नहीं है, इसलिए यह अभियान एक व्यापक पुनर्गठन प्रक्रिया का हिस्सा है। जानकारी के अनुसार, इस अभियान को इंडियन नेशनल कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है। शुरुआत में इसे एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया गया था, जिसका उद्देश्य गुजरात में कांग्रेस संगठन को जमीनी स्तर पर फिर से सक्रिय करना और कार्यकर्ताओं में नया आत्मविश्वास पैदा करना है। लंबे समय से राज्य में कमजोर प्रदर्शन और चुनावी हार के बाद पार्टी अब संगठनात्मक स्तर पर बड़े बदलाव की दिशा में आगे बढ़ती दिखाई दे रही है।

इसी क्रम में 6 मई 2026 को सूरत सर्किट हाउस में ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी (AICC) के वरिष्ठ नेता गौरवभाई पंड्या के नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में दक्षिण गुजरात के कई वरिष्ठ पदाधिकारी, जिला स्तर के नेता और संगठन से जुड़े प्रतिनिधि मौजूद रहे। बैठक में विशेष रूप से स्थानीय निकाय चुनावों में कांग्रेस के खराब प्रदर्शन पर गंभीर चर्चा हुई। नेताओं ने स्वीकार किया कि जमीनी स्तर पर संगठन की पकड़ कमजोर हुई है और कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय की कमी देखने को मिली है।

बैठक में यह भी चर्चा का विषय रहा कि कई क्षेत्रों में संगठनात्मक ढांचे में सक्रियता की कमी है, जिसके कारण भाजपा के मुकाबले कांग्रेस को अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं। कुछ नेताओं ने यह भी आरोप लगाया कि संगठन के भीतर "व्यक्ति विशेष की राजनीति" और गुटबाजी के कारण कार्यकर्ताओं का मनोबल प्रभावित हुआ है। हालांकि यह आरोप अनौपचारिक चर्चा के स्तर पर ही सामने आए हैं, लेकिन बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि संगठन को फिर से मजबूत करने के लिए आंतरिक सुधार आवश्यक हैं।

लंबी चर्चा के बाद सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि पूरे गुजरात में "कांग्रेस बचाओ अभियान" चलाया जाएगा। इस अभियान के तहत सबसे पहले दक्षिण गुजरात में गतिविधियां शुरू की जाएंगी, जिसके बाद उत्तर गुजरात, सौराष्ट्र और मध्य गुजरात में ज़ोनवार सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग स्तर पर संगठनात्मक समीक्षा की जाएगी और कार्यकर्ताओं से सीधे संवाद स्थापित किया जाएगा।

पार्टी सूत्रों के अनुसार, इन सम्मेलनों में बूथ स्तर से लेकर जिला स्तर तक संगठन की स्थिति का मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही यह भी तय किया जाएगा कि किन स्थानों पर नए नेतृत्व की आवश्यकता है और किन क्षेत्रों में पुराने ढांचे को पुनर्गठित करने की जरूरत है। अभियान का उद्देश्य केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं बल्कि संगठन को जमीनी स्तर पर पुनर्जीवित करना बताया जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार, अभियान का अंतिम बड़ा सम्मेलन अहमदाबाद में आयोजित किया जाएगा, जिसमें पूरे राज्य के प्रतिनिधि शामिल होंगे। इस सम्मेलन में अब तक की प्रगति की समीक्षा की जाएगी और आगे की रणनीति तय की जाएगी। इसके अलावा, दिल्ली स्थित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (AICC) कार्यालय पर एक धरना कार्यक्रम आयोजित करने की भी योजना बनाई गई है, ताकि संगठनात्मक मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर भी उजागर किया जा सके। कांग्रेस नेताओं का मानना है कि गुजरात जैसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य में पार्टी को फिर से मजबूत करने के लिए केवल चुनावी रणनीति नहीं, बल्कि संगठनात्मक सुधार सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

सोना-चांदी के वायदा में तेजी की आगेकूच जारीः सोना वायदा 916 रुपये और चांदी वायदो 8845 रुपये बढ़ा

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 186344.83 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 34894.45 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 151450.05 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मई वायदा 37141 पॉइंट के स्तर पर ट्रेड हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3508.74 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 24453.38 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सत्र के आरंभ में 152887 रुपये के भाव पर खूलकर, 153865 रुपये के दिन के उच्च और 152400 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 152132 रुपये के पिछले बंद के सामने 916 रुपये या 0.6 फीसदी की मजबूती के साथ 153048 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी मई वायदा 619 रुपये या 0.51 फीसदी की बढ़त के साथ 123070 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-पेटल मई वायदा 85 रुपये या 0.55 फीसदी की बढ़त के साथ 15429 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी जून वायदा सत्र के आरंभ में 152609 रुपये के भाव पर खूलकर, 153750 रुपये के दिन के उच्च और 152353 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 911 रुपये या 0.6 फीसदी की बढ़त के साथ 153013 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-टेन मई वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 152898 रुपये के भाव पर खूलकर, 153941 रुपये के दिन के उच्च और 152610 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 152352 रुपये के पिछले बंद के सामने 948 रुपये या 0.62 फीसदी की बढ़त के साथ 153300 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी जुलाई वायदा 254998 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 262443 रुपये और नीचे में 254722 रुपये पर पहुंचकर, 253265 रुपये के पिछले बंद के सामने 8845 रुपये या 3.49 फीसदी की तेजी के संग 262110 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी जून वायदा 8245 रुपये या 3.22 फीसदी बढ़कर 264451 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो जून वायदा 8129 रुपये या 3.17 फीसदी की तेजी

▸▸ क्रूड ऑयल वायदा 351 रुपये फिसला : कमोडिटी वायदाओं में 34894.45 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 151450.05 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 24453.38 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 37141 पॉइंट के स्तर पर

के संग 264420 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

मेटल वर्ग में 3077.83 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मई वायदा 4.1 रुपये या 0.31 फीसदी बढ़कर 1312.3 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता मई वायदा 1.3 रुपये या 0.38 फीसदी की तेजी के संग 347.85 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम मई वायदा 2.75 रुपये या 0.74 फीसदी औंधकर 367 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मई वायदा 10 पैसे या 0.05 फीसदी की नरमी के साथ 200.25 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 7330.09 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मई वायदा सत्र के आरंभ में 9087 रुपये के भाव पर खूलकर, 9094 रुपये के दिन के उच्च और 8608 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 351 रुपये या 3.89 फीसदी की गिरावट के साथ 8666 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मई वायदा 355 रुपये या 3.93 फीसदी औंधकर 8667 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस मई वायदा सत्र के आरंभ में 258.5 रुपये के भाव पर खूलकर, 259.6 रुपये के दिन के उच्च और 255 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 258.4 रुपये के पिछले बंद के सामने 2.8 रुपये या 1.08 फीसदी लुढ़ककर 255.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मई वायदा 2.7 रुपये या 1.04 फीसदी गिरकर 255.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मई वायदा सत्र के आरंभ में 988 रुपये के भाव पर खूलकर, 40 पैसे या 0.04 फीसदी के सुधार के साथ 988 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13850.70 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 10602.67 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2337.23 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 421.34 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 11.70 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 282.40 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 5983.55 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1319.41 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 0.46 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 11264 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 65507 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26546 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 365370 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 57188 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7264 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 22576 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 81313 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17252 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 34618 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मई वायदा 36950 पॉइंट पर खूलकर, 37150 के उच्च और 36950 के नीचले स्तर को छूकर, 416 पॉइंट बढ़कर 37141 पॉइंट के स्तर पर ट्रेड हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मई 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 184.7 रुपये की गिरावट के साथ 303 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 260 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.6 रुपये की गिरावट के साथ 9.2 रुपये हुआ। सोना मई 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 364 रुपये की बढ़त के साथ 2169 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1105 रुपये की बढ़त के साथ 1729 रुपये हुआ। तांबा मई 1400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 53 पैसे के सुधार के साथ 5.18 रुपये हुआ। जस्ता मई 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 22 पैसे के सुधार के साथ 4.2 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मई 8500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 112.3 रुपये की बढ़त के साथ 372 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 260 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.25 रुपये की बढ़त के साथ 13.7 रुपये हुआ। सोना मई 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 377 रुपये की गिरावट के साथ 1655 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 230000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 495.5 रुपये की गिरावट के साथ 1474 रुपये हुआ। तांबा मई 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.25 रुपये की गिरावट के साथ 20.68 रुपये हुआ। जस्ता मई 355 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 4.64 रुपये की गिरावट के साथ 9 रुपये हुआ।